

नए नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 15: ल्यूक और समकालिक समस्या का समापन

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट

ए. प्रार्थना का परिचय: फरीसी और कर संग्रहकर्ता [00:00-7:11]

ए: संयुक्त एसी; 00:00-11:22; प्रार्थना पर दृष्टांत

आज हम ल्यूक पर अपना तीसरा या चौथा व्याख्यान समाप्त करने की प्रक्रिया में हैं और आज हम ल्यूक पर कुछ ही मिनटों में समाप्त कर लेंगे और फिर मैं जो करना चाहूँगा वह है समकालिक सुसमाचारों की जाँच करना: मैथ्यू, मार्क और ल्यूक। उन तीनों को समकालिक सुसमाचार कहा जाता है और हम व्याख्यान के दूसरे भाग में उन पर नज़र डालने जा रहे हैं और तुलना और विरोधाभास विश्लेषण करने जा रहे हैं। तो चलिए ल्यूक की पुस्तक को समाप्त करते हैं।

लूका की पुस्तक में मूल रूप से दो चीजें थीं जो हम अब तक भूल गए हैं। उनमें से एक लूका की पुस्तक में प्रार्थना की प्रकृति है और इसलिए मैं यहाँ कुछ चीजों पर ध्यान देना चाहता हूँ जैसे कि उदाहरण के लिए, लूका की पुस्तक में आठ बार यीशु प्रार्थना करते हैं। इसलिए लूका, यदि आप प्रार्थना की तलाश में हैं, तो लूका सुसमाचार है। इसलिए लूका में यीशु आठ बार प्रार्थना करते हैं, उनमें से सात बार इस सुसमाचार के लिए अद्वितीय हैं। उनके पास प्रार्थना के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है और मैं इसे प्रार्थना पर मैथ्यू की टिप्पणियों के साथ तुलना करना चाहता हूँ, "मांगो और तुम्हें मिलेगा, खोजो और तुम पाओगे," और आपको इस तरह के कथन के साथ सावधान रहना होगा, कुछ लोग प्रार्थना को एक वेंडिंग मशीन की तरह देखेंगे, जहाँ आप ऊपर जाते हैं और अपने सिक्के डालते हैं और आप एक लीवर खींचते हैं और कैंडी नीचे गिरती है। उनके पास ईश्वर के बारे में एक वेंडिंग मशीन का दृष्टिकोण है और प्रार्थना के बारे में एक वेंडिंग मशीन का दृष्टिकोण है: "मांगो और तुम्हें मिलेगा" और वे प्रार्थना की जटिलताओं को नहीं समझते हैं, बल्कि वे मैथ्यू के पहाड़ी उपदेश से एक सरल कथन को पकड़ लेते हैं और फिर उसे पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। हमने पहले कहा था, आपको उन कथनों को पूर्ण करने के बारे में बहुत सावधान रहना होगा। इसलिए लूका प्रार्थना का एक और पक्ष प्रस्तुत करता है और हम बस उस पर गौर करना चाहते हैं

और ऐसे दो हैं जिन्हें मैं विशेष रूप से देखना चाहता हूँ। वे दोनों लूका अध्याय 18 में पाए जाते हैं। लूका अध्याय 18 में आपके पास प्रार्थना पर दो दृष्टांत हैं, इसलिए आपके पास प्रार्थना पर पूरे दृष्टांत हैं।

बी. प्रार्थना में नम्रता और गर्व - यीशु की प्रार्थना

मैं पहले वाले को पढ़ता हूँ, यह फरीसी और कर संग्रहकर्ता की प्रार्थना है। यह लूका 18:9 में है, जिसमें कहा गया है, "कुछ लोग जो अपनी धार्मिकता पर भरोसा करते हैं और दूसरों को नीचा देखते हैं।" यह इस दृष्टांत को स्थापित करता है। वे अपनी धार्मिकता पर भरोसा करते हैं और वे दूसरों को नीचा देखते हैं। देखिए, आप पहले से ही विरोधाभास देख सकते हैं और फिर उस तरह का अहंकार और अपने साथी व्यक्ति का अपमान करना और यह कैसे प्रार्थना में भूमिका निभाने वाला है।

ठीक है, तो यह दूसरों के प्रति उनके रवैये से शुरू होता है और इसे लेकर प्रार्थना की ओर मुड़ता है। यीशु ने उन्हें यह दृष्टांत बताया: "दो आदमी प्रार्थना करने के लिए मंदिर में गए, एक फरीसी और दूसरा कर संग्रहकर्ता। फरीसी खड़ा हुआ और अपने बारे में प्रार्थना करने लगा। 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों, लुटेरों, बुरे काम करने वालों, व्यभिचारियों या यहाँ तक कि इस जैसा नहीं हूँ' आप देख सकते हैं कि वह 'मुझे खुशी है कि मैं लुटेरों, बुरे काम करने वालों, व्यभिचारियों जैसा नहीं हूँ' के बारे में अपमानजनक ढंग से बोल रहा है, बस सामान्य रूप से बोलते हुए वह इसे और अधिक व्यक्तिगत बना देता है और फिर यह फरीसी 'या यहाँ तक कि इस कर संग्रहकर्ता जैसा भी हूँ' की ओर मुड़ जाता है। अब वह अपने बाएं या दाएं तरफ खड़े व्यक्ति के पास जा रहा है - इस कर संग्रहकर्ता के पास: मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ और जो कुछ भी मुझे मिलता है उसका दसवां हिस्सा देता हूँ," और इस तरह से इस व्यक्ति ने प्रार्थना की। खुद की तुलना दूसरों से करते हुए और सप्ताह में दो बार उपवास करने और अपने पास जो कुछ भी है उसका दसवां हिस्सा देने के बारे में भगवान से डींग हांकते हुए। यह दिलचस्प है क्योंकि यह धर्म की फरीसी धारणा के बारे में कुछ बताता है; कि उपवास इसका हिस्सा था और वे सप्ताह में दो बार उपवास करते थे और जो कुछ भी उनके पास था उसका दसवां हिस्सा देते थे।

अब यह बदल जाता है, "मैं आभारी हूँ कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूँ: व्यभिचारी, हत्यारे और यह कर संग्रहकर्ता।" अब हम इस कर संग्रहकर्ता से सुनने जा रहे हैं। "लेकिन कर संग्रहकर्ता दूर खड़ा था," आपको यह धारणा मिलती है कि फरीसी सामने, करीब और लोगों के सामने की तरह है, लेकिन कर संग्रहकर्ता दूर खड़ा था। "उसने स्वर्ग की ओर भी नहीं देखा, बल्कि उसने अपनी छाती पीटते हुए कहा..." फिर इसे लोग यीशु की प्रार्थना कहते हैं और यह पवित्रशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थनाओं में से एक है, यह एक ऐसी प्रार्थना है जिसे मैं बार-बार प्रार्थना करता हूँ और दुनिया भर के लोग बार-बार प्रार्थना करते हैं। यह एक बहुत ही छोटी प्रार्थना है, यह एक तरह की सांस लेने वाली प्रार्थना है जिसे आप बहुत ही कम समय में भगवान से कह सकते हैं और यह कहती है कि यह यीशु की प्रार्थना है: "भगवान मुझ पापी पर दया करें।" वह खुद की तुलना किसी और से नहीं करता है, आप देखते हैं कि फरीसी, जब वह भगवान को संबोधित कर रहा था, तो वह हर किसी को देख रहा था; यह कर संग्रहकर्ता सीधे परमेश्वर के साथ संवाद करता है। तब यीशु टिप्पणी करते हैं, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, यह व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के कारण घर गया। क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।" मुझे लगता है कि यहाँ जो दिलचस्प बात है, वह यह है कि यह हमें दिखाता है कि प्रार्थना के लिए कुछ नैतिक पूर्वपेक्षाएँ हैं। प्रार्थना के लिए कुछ नैतिक पूर्वपेक्षाएँ हैं और इसलिए यह व्यक्ति, क्योंकि उसने अपने आप को छोटा किया, कर संग्रहकर्ता ने अपने आप को छोटा किया, "परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करो," वह धर्मी ठहराए जाने के कारण नीचे उतरा। धर्मी ठहराए जाने वाला शब्द बहुत दिलचस्प है। इस व्यक्ति को, जिस तरह से उसने प्रार्थना की, उसके कारण परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया गया। फरीसी अपनी सारी धार्मिकता में, दूसरों को नीचा दिखाने के कारण धर्मी नहीं ठहराया गया। तो यह यीशु की प्रार्थना है। "परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करो," और यह रुख, यह विनम्र रुख वास्तव में एक महत्वपूर्ण रुख है जिसे कोई व्यक्ति परमेश्वर के पास जाते समय चाहता है। किसी को अहंकार में नहीं बल्कि विनम्रता से प्रार्थना करनी चाहिए, और विनती करनी चाहिए कि "हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो।" तो यह एक बहुत छोटी प्रार्थना है। आपके पास प्रभु की प्रार्थना है, "हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं," हम में से बहुत से लोग इसे जानते हैं। लेकिन यह सिर्फ एक लाइनर है, "हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो"

और मुझे लगता है कि लोगों के लिए अक्सर, बार-बार, प्रतिदिन, हर घंटे और वास्तव में हर मिनट, अगर ऐसा कोई शब्द है, तो प्रार्थना करना उचित है। तो विनम्रता एक तरह से गर्व के विरुद्ध एक आधार है, जो किसी व्यक्ति के चरित्र गुण के रूप में प्रार्थना के प्रति प्रतिक्रिया को नियंत्रित करता है।

सी. प्रार्थना में दृढ़ता: दृढ़ विधवा [7:11-11:22]

अब एक दूसरी प्रार्थना है जो सामने आती है और यह स्त्री और अन्यायी न्यायाधीश है। स्त्री अन्यायी न्यायाधीश और यह लूका 18 से एक और दृष्टांत है। लूका 18 इसी से शुरू होता है और हम इसे पढ़ेंगे: "तब यीशु ने अपने शिष्यों को यह दृष्टांत बताया कि उन्हें हमेशा प्रार्थना करना चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए।" तो यह प्रार्थना में दृढ़ता के बारे में है कि उन्हें हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए। मुझे अपने जीवन में विभिन्न बिंदुओं पर बताया गया है कि यदि आप ईश्वर पर भरोसा करते हैं, आप ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो वह जानता है कि आपके दिल में क्या है इसलिए आपको उससे एक बार से अधिक पूछने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह जानता है कि आप क्या चाहते हैं। इसे बार-बार दोहराना, केवल व्यर्थ की बकवास बन जाता है और यीशु ने कहा कि बार-बार प्रार्थना मत करो, बेकार की पुनरावृत्ति। लेकिन यहाँ, यीशु प्रार्थना करने और हमेशा प्रार्थना करने और हार न मानने के बारे में बात करता है।

उन्होंने कहा, और अब वे एक दृष्टांत बताने जा रहे हैं "एक निश्चित शहर में, एक न्यायाधीश था जो न तो ईश्वर से डरता था और न ही मनुष्यों की परवाह करता था। और उस शहर में एक विधवा थी जो उसके पास शिकायत लेकर आती रहती थी।" ध्यान दें, ल्यूक फिर से विधवा को उठाता है। याद रखें कि हमने पिछले व्याख्यान में पहले कहा था कि ल्यूक विधवा को उठाता है और वह एकमात्र बच्चे को उठाता है। तो यहाँ एक विधवा है, जो उस संस्कृति में वंचित है, उस संस्कृति में एक जरूरतमंद व्यक्ति, एक न्यायाधीश के पास आ रहा है। एक न्यायाधीश को क्या करना चाहिए? एक न्यायाधीश को विधवा, अनाथों, अनाथों, गरीबों और विदेशियों के लिए न्याय करना है। इसलिए न्यायाधीश को उन लोगों की देखभाल करनी है और उनके लिए न्याय करना है जिन्हें समाज में न्याय नहीं मिल सकता है, इसलिए यहाँ आपको यह विधवा न्यायाधीश के सामने

आती हुई दिखाई देती है। न्यायाधीश एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, वह एक निम्न दर्जे की व्यक्ति है। वह इस न्यायाधीश के पास आती है और वह न तो ईश्वर की परवाह करता है, न ही ईश्वर से डरता है और न ही मनुष्यों की परवाह करता है।

" और उस शहर में एक विधवा थी जो उसके पास यह विनती लेकर आती थी, 'मेरे विरोधी के विरुद्ध मुझे न्याय प्रदान करो।' अब, मामले का तथ्य यह है कि यह एक दृष्टांत है इसलिए हम पूरी कहानी नहीं जानते। हम कभी नहीं जानते कि वह क्या था जो उसे परेशान कर रहा था। वह किस अन्याय का उल्लेख कर रही थी और इस विरोधी ने उसके साथ क्या किया था और क्या कर रहा था? हम यह नहीं जानते। इसलिए दृष्टांत आपको वे सभी छोटे दिलचस्प विवरण नहीं बताते हैं जो आप जानना चाहते हैं। एक दृष्टांत एक कहानी है और इसका एक उद्देश्य है। यह दृष्टांत उस बिंदु पर निर्देशित है और इसलिए हम वास्तव में नहीं जानते कि अन्याय क्या था लेकिन "कुछ समय तक उसने मना किया लेकिन अंत में उसने खुद से कहा, 'भले ही मैं भगवान से डरता नहीं हूँ या पुरुषों की परवाह नहीं करता हूँ, फिर भी क्योंकि यह विधवा मुझे परेशान करती रहती है, मैं देखूंगा कि उसे न्याय मिले ताकि वह अंततः मेरे पास आकर मुझे परेशान न करे।' ठीक है, और दृष्टांत: तब प्रभु ने कहा, "सुनो अन्यायी क्या कहता है, न्यायाधीश क्या कहता है, और क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों के लिए न्याय नहीं करेगा जो दिन-रात उसकी दुहाई देते हैं।" दिन और रात रोने पर ध्यान दें लोग दिन और रात रोने के लिए भगवान के पास वापस आते रहते हैं। "क्या वह उन्हें टालता रहेगा? मैं तुमसे कहता हूँ कि वह देखेगा कि उन्हें जल्दी से न्याय मिले। हालाँकि, जब मनुष्य का पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? फिर अचानक दृष्टांत के अंत में आपको यह छलांग मिल गई है, अंतिम दिनों तक। "जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? और यह एक दिलचस्प छलांग है। उन्हें न्याय मिलेगा। और फिर वह इसे उस युगांतिक, "अंत के दिनों में" जैसी बात में रखता है, कि परमेश्वर न्याय करेगा और फिर उस न्याय को अंतिम दिनों से जोड़ता है।

डी. प्रार्थना में दृढ़ता: पॉल और भजन [11:22-14:09]

बी: संयुक्त डी.एफ.; 11:22-19:34; प्रार्थना भाग 2

तो इसका संबंध प्रार्थना में दृढ़ता, एक ही चीज़ के लिए बार-बार प्रार्थना करना और एक ही चीज़ के लिए बार-बार माँगना और मूल रूप से यह कहना है कि हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए। मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है। मुझे लगता है कि गेथसेमेन के बगीचे में यीशु ने लोगों से कहा, "ठीक है, हमें एक ही चीज़ के लिए बार-बार प्रार्थना नहीं करनी चाहिए।" गेथसेमेन के बगीचे में यीशु, क्या आपको याद है कि वह तीन बार चले गए और तीन बार प्रार्थना की, "हे पिता, अगर आपकी इच्छा है तो यह प्याला मुझसे ले लो।" यीशु ने परमेश्वर से प्याला, दुःख का प्याला, उससे दूर करने के लिए कहा। यहूदा उसके पास आने वाला था, और उसने उसके लिए तीन बार प्रार्थना की और फिर यहूदा आया और उसे धोखा दिया।

पॉल, 2 कुरिन्थियों 12 में पॉल अपने शरीर में काँटे के बारे में बताता है। अब हम वास्तव में नहीं जानते कि शरीर में वह काँटा क्या है, लोगों के पास इस पर बहुत सारे अनुमान हैं, लेकिन पॉल के शरीर में यह काँटा था जो उसे परमेश्वर ने दिया था, वह तीन बार प्रार्थना करता है, "पिता, इसे मुझसे दूर कर दो।" उसने प्रार्थना की कि उसके शरीर का काँटा दूर हो जाए; परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया। तो, यह दिलचस्प है कि लगातार प्रार्थना करने की यह धारणा पवित्रशास्त्र में एक बड़ी बात है, हम देखते हैं कि पॉल किसी चीज़ के लिए तीन बार प्रार्थना करता है, यीशु किसी चीज़ के लिए तीन बार प्रार्थना करता है। तो यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें प्रार्थना में सोचने की ज़रूरत है।

भजन संहिता भी, मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ, भजन संहिता की पुस्तकें भी, मुख्य रूप से ईश्वर के लिए गाई जाने वाली प्रार्थनाओं की पुस्तक है। वे भजन इज़राइल में त्योहारों और पर्वों पर बार-बार गाए जाते थे। तो यह माँगने और प्रार्थना करने की धारणा है। आपके कई चर्च प्रभु की प्रार्थना करेंगे और हम प्रभु की प्रार्थना का पाठ करते हैं और हममें से कुछ लोग लगभग रोज़ाना प्रभु की प्रार्थना का पाठ करते हैं। तो ये अद्भुत चीज़ें हैं और प्रार्थना उनके बारे में हमारी बातचीत को जारी रखती है।

मैं इसे कुछ इस तरह से तुलना कर सकता हूँ - और यह कोई दृष्टांत नहीं है, यह कुछ हद तक समानांतर है - मान लीजिए, मैं अपने पोते बेन के बारे में सोचता हूँ, और उसे क्रिसमस के लिए एक साइकिल मिल रही थी और वह मेरी पत्नी के पास आया और हर दूसरी पंक्ति में उसने यही कहा कि उसे क्रिसमस के लिए यह साइकिल चाहिए। ऐसा होता था कि हर बार जब वह मेरी पत्नी

से बात करता था, तो परिवार में जो भी चल रहा होता था, वह इस बात पर आकर खत्म हो जाता था कि "ओह, ज़रूर, मुझे क्रिसमस के लिए एक साइकिल चाहिए। मुझे ज़रूर एक साइकिल चाहिए। क्या तुम्हें मेरी साइकिल क्रिसमस के लिए मिल गई है? तुमने मुझे किस तरह की साइकिल दी है?" यह हमेशा उसी पर वापस आता था। तो इस तरह से उसका ध्यान केंद्रित होता था, वह वास्तव में यह चीज़ चाहता था और इसलिए वह एक युवा व्यक्ति के रूप में एक बच्चे के रूप में वास्तव में इस साइकिल के बारे में बहुत सोचता था और इसलिए जब वह अपने दादा-दादी से बात करता था, तो इस मामले में यह कुछ इस तरह था कि "यह साइकिल कहाँ है? क्या तुम मुझे क्रिसमस के लिए साइकिल ला सकते हो?" फिर ऐसा बार-बार किया गया और फिर बेशक हमें नहीं पता था कि सांता क्लॉज़ ने उसे क्या दिया था लेकिन शायद उसे उस साल एक साइकिल मिली होगी।

ई. जब ज़रूरी हो तब प्रार्थना करना- अफ़गानिस्तान में एक बेटा [14:09-16:35]

अब, बस थोड़ा सा नीचे। जब चीज़ें मायने रखती हैं, तब प्रार्थना करना मेरे लिए एक दिलचस्प बात है। मुझे लगता है कि वास्तव में मेरा बेटा उन लोगों में से एक था जिसने मुझे प्रार्थना करना सिखाया। मैं कई बार गॉर्डन कॉलेज में होने वाली चीज़ों और छात्रों या लोगों के साथ संबंधों के बारे में प्रार्थना करता हूँ, कुछ छात्रों को समस्याएँ हैं, एक बच्चे का पैर टूट गया है और अन्य बच्चे संस्कृतियों के बीच आने से पीड़ित हैं और संस्कृतियों को अपनाने में बहुत मुश्किल हो रही है, दूसरों को भाषा की समस्या है और वे भाषा के साथ संघर्ष कर रहे हैं, अन्य अपने पूरे परिवार और यहाँ गॉर्डन में रिश्तों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। इसलिए आप लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं और आप उनके लिए अनुरोध करते हैं। लेकिन एक अर्थ में, खेल में कोई जोखिम नहीं है। यह ऐसा है जैसे भगवान जो भी करेंगे वह ठीक होगा, इसलिए आप बस इसे भगवान के सामने लाने के लिए प्रार्थना करते हैं।

मेरा बेटा, जो एक मरीन है, अफ़गानिस्तान गया और जब वह इराक में था - वह कुछ साल पहले इराक गया था - और वह उतना बुरा नहीं था, लेकिन जब वह अफ़गानिस्तान गया तो यह वास्तव में बहुत बुरा हो गया। एक अभिभावक के रूप में, जब आप असहाय महसूस करते हैं, तो आम तौर पर यह एक अभिभावक की भूमिका होती है, विशेष रूप से पिता की, अपने बच्चों की

रक्षा करना, और जब आप सुरक्षा नहीं कर सकते और जो कुछ भी होता है उस पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता है और व्यक्ति को गोली लग जाती है और, आप फ़ोन पर बात करते हैं और वह कहता है, "हमें हर दिन गोली लगती है" और आप जानते हैं और अन्य लोग, उसके दोस्त वास्तव में मारे गए [द्विग] और अपंग [रयाज़] और चोटिल [हैडली] और अन्य [बंचेस] इस तरह और आप जानते हैं कि यह वह हो सकता था। आप इस असहायता की भावना से प्रार्थना करते हैं। आप भीख माँगना सीखते हैं, कि भगवान उस व्यक्ति की जान बख्श दें। पुराने नियम में अब्राहम को याद करें, उसने कहा कि अगर 50 धर्मी होते, तो क्या आप शहर को छोड़ देते? अगर 40, 30, 10 लोग होते... तो क्या आप शहर को छोड़ देते? मुझे याद है कि मैंने भी यही कहा था, "हे भगवान, अगर यह वह या मैं होने जा रहा हूँ, तो मुझे उसके बजाय ले लो, क्योंकि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ और मैं जाने के लिए तैयार हूँ।" और इसलिए आप प्रार्थना करते हैं, भीख माँगते हैं, विनती करते हैं और जो कुछ भी आप कर सकते हैं करते हैं क्योंकि यह आपके लिए बहुत मायने रखता है।

एफ. जब यह मायने रखता है तब प्रार्थना करना - बीमार बच्चे और उत्पीड़न [16:35- 19:34]

तो इस तरह की प्रार्थना होती है और मुझे नहीं पता कि आपके ऐसे दोस्त हैं जिनके लिए आपने प्रार्थना की है - मैं दूसरे लोगों के बारे में सोचता हूँ, मेरा एक दोस्त है ब्रायन किन्नी, जो बेकर बुक हाउस और ब्रायन के लिए काम करता है और मैं उसे कई सालों से जानता हूँ। उसके लड़के को ल्यूकेमिया हो गया, और उसका लड़का, जो पाँच या छह साल का है, ल्यूकेमिया, कैंसर और इस तरह की बीमारियों से पीड़ित हो गया, और वह मौत के कगार पर था। डॉक्टर अब अद्भुत काम कर रहे हैं, अविश्वसनीय काम, और इसलिए हमने प्रार्थना की और ब्रायन किन्नी के लड़के के लिए बहुत से लोग प्रार्थना कर रहे थे। डॉक्टर सफल रहे। अब, मुझे नहीं पता, यह अब सालों बाद की बात है, इसलिए मुझे यकीन नहीं है, लेकिन वे सफल रहे, और यह ठीक हो गया। वह ठीक लग रहा था और ल्यूकेमिया चला गया, वे इससे पीड़ित हो गए। यह वाकई रोमांचक था, हमने उसके लिए शायद एक साल तक प्रार्थना की, इस छोटे बच्चे के लिए प्रार्थना की, और भगवान ने उसकी जान बचाई और यह वाकई एक अद्भुत बात है। एक अभिभावक के रूप में आप देख सकते हैं कि जब आपके बच्चे को इनमें से कोई भयंकर बीमारी हो जाती है तो आपको एहसास होता है कि आप

एक अलग स्थिति में हैं, जहां आप किसी चीज के लिए प्रार्थना कर रहे हैं और यह वास्तव में इतना मायने नहीं रखता है, और फिर अचानक आप प्रार्थना करते हैं और यह वास्तव में मायने रखता है।

मेरी बेटी के पति को अब कान के अंदर ब्रेन ट्यूमर है। वह पहले ही अपनी सुनने की क्षमता खो चुका है और वह एक वकील है इसलिए यह बहुत मायने रखता है कि वह सुन सकता है - या शायद एक वकील के रूप में उसे सुनना नहीं चाहिए - लेकिन उसे यह ट्यूमर है और वे अंदर जाने से डरते हैं क्योंकि यह एक तंत्रिका के आसपास है और उसके चेहरे के आधे हिस्से को भी लकवा मार सकता है और इस बारे में सभी तरह की चर्चा और प्रार्थनाएं होती हैं और इसलिए हम अब नियमित रूप से उसके लिए प्रार्थना करते हैं।

इसलिए हमें हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए। दुनिया में ऐसी बड़ी चीजें हो रही हैं जिनके लिए प्रार्थना की जानी चाहिए। ईरान में एक आदमी था जो ईरान में ईसाई धर्म का अनुयायी था और वह ईरान में पादरी था। उन्होंने कहा कि उसने इस्लाम से धर्म परिवर्तन किया है और आपको इस्लाम से ईसाई धर्म में धर्म परिवर्तन करने की अनुमति नहीं है। उसने बचपन में ही धर्म परिवर्तन कर लिया था। उन्होंने उसे कहा, "तुम अपने विश्वास से इनकार करो या तुम मर जाओगे।" उसने अपने विश्वास से इनकार नहीं किया और अब बड़ा सवाल यह है कि क्या उन्होंने उसे मार दिया है। उसका नाम योसिफ था। तो आप जानते हैं कि आपको इस तरह की चीजें मिलती हैं और आप इस आदमी के लिए प्रार्थना करते हैं, उसके पास एक पत्नी और बच्चे हैं, और उसे उसके विश्वास के लिए रखा जा रहा है और वह शहीद के रूप में मर सकता है। यह 21^{वीं} सदी है, 21^{वीं} सदी और वह अपने विश्वास के लिए शहीद के रूप में मर रहा है। और उसे बस इतना करना है कि वह अपने धर्म से मुकर जाए लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा क्योंकि वह एक ईसाई है और वह प्रभु से प्यार करता है। तो ये चीजें यहाँ हो रही हैं और प्रार्थना की ज़रूरत है, प्रार्थना की सख्त ज़रूरत है। इसलिए प्रार्थना एक बड़ी बात है और लूका 18 वास्तव में बहुत अच्छा है, क्योंकि वहाँ प्रार्थना पर दो दृष्टांत हैं।

जी. इम्मौस रोड: यीशु का भेष और शिष्यों की आशा [19:34-23:15]

सी: संयुक्त जीआई; 19:34-29:23; एम्माउस रोड. ओटी उपयोग

यहाँ एक और बात है जिसे मैं यहाँ, लूका में कवर करना चाहता था, और वह है इसे समाप्त

करना। और यह इम्माँस रोड है। इम्माँस रोड एक प्रसिद्ध कथा है, जब यीशु मृतकों में से जी उठे थे और उनके शिष्य तब चिंतन कर रहे थे, "यीशु क्रूस पर मरे" और वे सभी वास्तव में निराश, निराश, निराश थे। तीन दिनों के बाद वह मृतकों में से जी उठे और जब उन्होंने खुद को दिखाया, तो कुछ लोग उन्हें देख पाए, कुछ लोग नहीं देख पाए। जब हम जॉन में जाते हैं तो आपको थॉमस याद आता है। उसने अभी तक खुद उसे नहीं देखा था और इसलिए वह चीजों पर सवाल उठाता है। यह इम्माँस रोड है जहाँ दो व्यक्ति यरूशलेम से अकेले ही बाहर निकल रहे हैं। वे मसीह की मृत्यु के लिए यरूशलेम में थे और उन्होंने पुनरुत्थान की अफवाहें सुनी हैं लेकिन वे नहीं जानते कि वास्तव में क्या हो रहा है। इसलिए वे सब्बाथ के दिन इम्माँस रोड पर चल रहे हैं, यह यरूशलेम से पश्चिम की ओर लगभग 7 मील दूर है, और इसलिए वे इस सड़क पर जा रहे हैं। मुझे इस इम्माँस रोड पर चलने का सौभाग्य मिला है। यह एक पुरानी रोमन सड़क है। रोमनों ने पूरे साम्राज्य में सड़कें बनवाईं और ये सड़कें इतनी अच्छी हैं कि आज भी मौजूद हैं। उनमें से कई सड़कें गड्ढों से रहित हैं; वे पत्थर के स्लैब से बनी हैं, वाकई अविश्वसनीय सड़क संरचना है।

यह लूका अध्याय 24 से है, जो पद 13 से शुरू होता है। इसमें लिखा है "अब उसी दिन, उनमें से दो इम्माऊस नामक एक गाँव में जा रहे थे, जो यरूशलेम से लगभग 7 मील दूर था और वे एक दूसरे से सब कुछ के बारे में बात कर रहे थे" - ठीक है, अब यह यीशु की मृत्यु है, पुनरुत्थान की अफवाहें - "और जब वे आपस में इन बातों पर चर्चा कर रहे थे, तो यीशु स्वयं उनके पास आए और उनके साथ चलने लगे। लेकिन उन्हें उन्हें पहचानने से रोका गया" - इसलिए यीशु उनके पास आए, और उनके साथ चल रहे थे और वे नहीं जानते थे कि यह यीशु है क्योंकि यीशु कुछ ऐसा करते हैं, मुझे नहीं पता, शायद उन्होंने हुडी या कुछ और पहना हुआ है, वे नहीं जानते कि वह कौन है। "और इसलिए उसने उनसे पूछा 'तुम साथ-साथ चलते हुए क्या चर्चा कर रहे हो?' वे चुपचाप खड़े रहे, उनके चेहरे उदास थे, अभी भी सोच रहे थे कि यीशु मर चुका है। उनमें से एक, जिसका नाम क्लियोपास था, ने उससे पूछा, 'क्या तुम यरूशलेम में एकमात्र आगंतुक हो जो इन दिनों वहाँ हुई चीजों के बारे में नहीं जानते हो?' 'कौन सी चीजें?'" उसने पूछा। यह कुछ इस तरह है कि "क्या हो रहा है", उन्हें जानकारी देने के लिए कहना और यीशु के बारे में उनके विचारों पर उनके दृष्टिकोण को देखना। यह यीशु है, वह उनसे पूछता है, "कौन सी बातें?" उसने उनसे पूछा। "नासरत के यीशु

के बारे में,' उन्होंने उत्तर दिया, 'वह एक भविष्यवक्ता था।'" बहुत दिलचस्प है। वह एक भविष्यवक्ता था। यीशु के बारे में उनकी समझ क्या थी? वह एक भविष्यवक्ता था। "परमेश्वर और सभी लोगों के सामने वचन और कर्म में शक्तिशाली। मुख्य पुजारियों और हमारे शासकों ने उसे मृत्युदंड की सजा देने के लिए सौंप दिया और उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया। लेकिन हमें उम्मीद थी कि वह वही है जो आने वाला है"-- अब उनकी आशा की प्रकृति क्या थी? यह वास्तव में एक बहुत ही बढ़िया मार्ग है क्योंकि यह हमें बताता है, यहाँ दो यहूदी लोग हैं, वे मसीहा के लिए अपनी आशा की प्रकृति का वर्णन कर रहे हैं। तो यहाँ उनकी आशा है जिसका वे वर्णन करते हैं। "लेकिन हमें उम्मीद थी कि वह वही है जो इस्राएल को छुड़ाने के लिए आ रहा है।" तो मुद्दा यह था कि मसीहा को इस्राएल को छुड़ाना और उस पर शासन करना था, रोमन जुए को उतार फेंकना था, इस्राएल को छुड़ाने के लिए दाऊद के बेटे को स्थापित करना था। "और इससे भी बढ़कर, यह सब होने के बाद से तीसरा दिन है। इसके अलावा, हमारी कुछ महिलाओं ने" - अब वह कुछ अफवाहों के बारे में बताने जा रहा है - "इसके अलावा हमारी कुछ महिलाओं ने हमें आश्चर्यचकित किया। और वे आज सुबह कब्र पर गईं, लेकिन उन्हें उसका शरीर नहीं मिला। वे आई और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का एक दर्शन देखा था जिन्होंने कहा था कि वह जीवित था।" - फिर से ये महिलाएँ इसकी रिपोर्ट कर रही हैं, लेकिन उन्होंने रिपोर्ट सुनी, लेकिन इसकी पुष्टि नहीं कर सकीं। इसलिए वे निश्चित नहीं हैं, ऐसा हुआ या नहीं हुआ। शरीर चला गया, ये स्वर्गदूत कहाँ से आए ?

एच. इमॉस रोड: यीशु शिष्यों को सिखाता है [23:15-26:50]

वैसे, क्या किसी को लूका की किताब की शुरुआत याद है, यह लूका का आखिरी अध्याय है, क्या किसी को लूका की शुरुआत याद है, कौन दिखाई देता है? स्वर्गदूत मसीह के जन्म के समय दिखाई देते हैं और *ग्लोरिया इन एक्सेलसिस गा रहे हैं देवो* जैसी बात। शुरुआत में महिमा। स्वर्गदूत आकर चरवाहों को इसकी घोषणा करते हैं और अब आपको यहाँ स्वर्गदूत किताब के अंत में रिपोर्ट करते हुए मिल गए हैं। उन्हें शव नहीं मिला, वे आए और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का एक दर्शन देखा था जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। - "फिर हमारे कुछ साथी कब्र पर गए और जैसा महिलाओं ने कहा था वैसा ही पाया, लेकिन उन्होंने उसे नहीं देखा।" - तो अब महिलाओं की रिपोर्ट

की पुष्टि हो गई है। शव चला गया है, लेकिन वे अभी भी नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है। "उसने उनसे कहा, (अब यीशु बीच में बोलते हैं) 'तुम कितने मूर्ख हो, भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ कहा है, उस पर विश्वास करने में कितने धीमे हो। क्या मसीह को अपनी महिमा में प्रवेश करने के लिए इन चीजों को नहीं सहना पड़ा?' तो फिर यीशु भविष्यवक्ताओं से यह धारणा उठाते हैं कि मसीहा को पीड़ित होने की आवश्यकता थी। यह जरूरी नहीं है कि केवल मसीहा बेन डेविड ही पीड़ित होगा, बल्कि मसीहा बेन जोसेफ भी पीड़ित होगा, जैसे जोसेफ ने जेल में सही तरीके से पीड़ित किया था। तो अब मसीहा को कष्ट सहना था। और यह संभवतः यशायाह 53 का संदर्भ है, कि वह हमारे कष्टों और हमारी दुर्बलताओं को सहेगा। वह वध के लिए एक मेमने की तरह था, उसने हमारे अधर्म को अपने ऊपर ले लिया--यशायाह 53। हम सभी भेड़ों की तरह भटक गए हैं।

फिर यह कहा गया है कि "क्या मसीह को ये दुख नहीं सहने पड़े ताकि वह महिमा में प्रवेश करे? और मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं से शुरू करके, उसने उन्हें समझाया कि शास्त्रों में उसके बारे में क्या कहा गया था।" यह कितना बड़ा व्याख्यान रहा होगा। यीशु मूसा से शुरू करते हैं। ध्यान दें कि वह पेंटाट्यूक में वापस जाता है, वह मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं के पास वापस जाता है और उन्हें मसीह के बारे में समझाता है। "और जब वे उस गाँव के पास पहुँचे जहाँ वे जा रहे थे, तो यीशु ने ऐसा व्यवहार किया जैसे कि वह आगे जा रहा हो, लेकिन उन्होंने उससे दृढ़ता से आग्रह किया, 'हमारे साथ रहो क्योंकि शाम होने वाली है, दिन लगभग खत्म हो गया है।' और इसलिए वह उनके साथ रहने के लिए अंदर चला गया। "

और इसलिए अब वह उनके साथ मेज़ पर बैठ जाता है। उसने रोटी ली, धन्यवाद दिया, उसे तोड़ा और उन्हें देना शुरू कर दिया। तो अब आप देख सकते हैं कि यीशु मेज़ पर बैठे हैं, उनके साथ रोटी तोड़ रहे हैं, रोटी के लिए धन्यवाद दे रहे हैं। क्या यह आपको किसी चीज़ की याद दिलाता है? यह कुछ हद तक यूचरिस्ट के बाद, प्रभु के भोज के बाद जैसा है। यीशु उनके साथ बैठकर रोटी तोड़ रहे हैं, जैसे वे पहले अपने शिष्यों के साथ बैठकर रोटी तोड़ते थे। अब वे फिर से रोटी तोड़ रहे हैं और देखें कि क्या होता है: "तो फिर वह उनके साथ मेज़ पर था, और उसने रोटी ली, धन्यवाद दिया, उसे तोड़ा और उन्हें देना शुरू कर दिया। तब उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया। और वह उनकी नज़रों से ओझल हो गया। उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, 'क्या हमारे

दिल हमारे भीतर जल नहीं रहे थे जब वह हमारे साथ सड़क पर बात कर रहा था और हमारे लिए शास्त्र खोल रहा था?" "क्या हमारे दिल हमारे भीतर जल नहीं रहे थे जब उसने हमारे लिए शास्त्र खोल दिए?" यह एक सुंदर, सुंदर कहावत है। "वे उठे और तुरंत यरूशलेम लौट आए, जहाँ उन्होंने ग्यारह और उनके साथियों को इकट्ठा पाया।" तो आपके पास ग्यारह प्रेरित और उनके साथ इकट्ठे हुए लोग हैं, जाहिर तौर पर सिर्फ प्रेरितों से ज़्यादा। "कहते हुए, 'यह सच है, यीशु जी उठा है और शमौन को भी दिखाई दिया है।' उन दोनों ने बताया कि रास्ते में क्या हुआ था और कैसे यीशु को उन्होंने पहचाना जब उसने रोटी तोड़ी।"

I. यीशु संपूर्ण पुराने नियम की पूर्ति के रूप में [26:50-29:23]

अब मुझे लगता है कि एक और अंश है जिसे मैं सामने लाना चाहता हूँ और यह अध्याय 24:44 में है। उनका वर्णन सुनना दिलचस्प है। इसमें यह लिखा है "उसने उनसे कहा [यह यीशु बोल रहा है] 'यह वही है जो मैंने तुमसे कहा था जब मैं तुम्हारे साथ था। सब कुछ पूरा होना चाहिए जो [और फिर वह पुराने नियम का वर्णन करता है, और यहाँ वह इसका वर्णन करता है] सब कुछ पूरा होना चाहिए जो व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में लिखा है।" और इसलिए यहाँ, ल्यूक अध्याय 24:44 में, आपके पास पुराने नियम का तीन गुना कैनन है। यह यहूदी कैनन है: मूसा, पेंटाटेच, उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण, तोराह; फिर आपके पास भविष्यद्वक्ता हैं, जोशुआ, न्यायाधीशों और शमूएल, राजाओं से शुरू होने वाले पूर्व भविष्यद्वक्ता, जिन्हें पूर्व भविष्यद्वक्ता कहा जाता है। बाद के भविष्यद्वक्ता: यशायाह यिर्मयाह, यहजेकेल, दानियेल और बारह। और इसलिए आपके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता और भजन हैं। पुराने नियम का दूसरा भाग लेखन है जिसमें भजन प्रमुख है। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है, भजन। इसलिए यीशु यहाँ पुराने नियम के तीन भागों का उल्लेख करते हैं और अपने लोगों को समझाते हैं कि "उन्हें मेरे बारे में ये बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में बतानी चाहिए। और उसने उनके दिमाग खोल दिए ताकि वे शास्त्रों को समझ सकें।" यह पुनरुत्थान के बाद की बात है और यीशु अपने शिष्यों के साथ मूसा, भविष्यद्वक्ताओं और लेखन या भजनों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। इसलिए जब आप विहित अध्ययनों के बारे में सोच रहे हों तो यह एक महत्वपूर्ण मार्ग है। पुराने नियम को इन तीन भागों में

विभाजित किया गया था। पुनरुत्थान के बाद यीशु ने उन तीन भागों का उल्लेख किया है।

लूका की पुस्तक का अंत हमारे लिए हो गया। और अब हमने लूका को पूरा कर लिया है, अब हम एक कदम पीछे हटेंगे। हम मत्ती, मसीह राजा है: मरकुस, अद्भुत पीड़ित सेवक को देख रहे थे; और हमने लूका, सिद्ध मनुष्य को देखा; मसीह विभिन्न तरीकों से बढ़ रहा है। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह इम्मांस रोड से आगे बढ़कर यहाँ एक और पूरे खंड पर जाना है। मुझे इससे बाहर निकलने दो, वापस आओ।

जे. सिनॉटिक गॉस्पेल और प्रारंभिक चर्च [29:23-33:52]

डी: संयुक्त जेएल; 29:23-43:40; सुसमाचार की ऐतिहासिकता

अब हम समकालिक समस्या में जाएँगे। समकालिक समस्या क्या है? समकालिक समस्या मूल रूप से तब होती है जब आप मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की तुलना करते हैं। तो समानताएँ होंगी और अंतर भी होंगे। जब समानताएँ होती हैं, तो कोई समस्या नहीं होती। जब सुसमाचार लेखक, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, सभी एक ही बात कहते हैं, तो यह वास्तव में कोई समस्या नहीं है। लेकिन ये तीनों सुसमाचार बहुत समान प्रतीत होते हैं, इसलिए वे उन्हें "समकालिक" कहते हैं। आपको समकालिक मिलता है, जो "सिन -ऑटिक" जैसा है। ग्रीक में *सिन का अर्थ है "साथ"*, *ऑटिक* जैसे ऑटिशियन, नेत्र विज्ञान, इसलिए समकालिक का अर्थ है "एक आँख से।" समकालिक समस्या कहती है कि ये तीनों सुसमाचार, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, यीशु को एक आँख से देखते हैं। दूसरी ओर, जॉन पूरी तरह से अलग है। वह पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण देता है। इसलिए जैसे आपको गहराई का बोध कराने के लिए दो आँखों की आवश्यकता होती है और आपके पास दो आँखें हैं ताकि आप महसूस कर सकें कि कुर्सी करीब है; कमरे के पीछे की घड़ी बहुत दूर है। आपके पास गहराई का बोध है क्योंकि आपके पास दो आँखें हैं। वे वास्तव में दो कैमरों के साथ वीडियो कैमरा विकसित कर रहे हैं जो लगभग हमारी आँखों की तरह शूटिंग करते हैं, ताकि वीडियो कैमरा के काम में भी तीन आयामों का बोध हो सके। यह एक तरह से बढ़िया है जो हो रहा है। "आपके पास जो है वह यह है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक एक दृष्टिकोण दे रहे हैं और जॉन एक और दृष्टिकोण दे रहे हैं। सिनॉटिक्स के बीच बहुत अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। लेकिन सिनॉटिक्स के बीच - वे सभी

एक ही आंख से हैं, समानताएं और बहुत अंतर हैं। इसलिए हम उस पर गौर करना चाहते हैं। तो, सिनॉट्रिक, सिन -ऑट्रिक, एक आंख से। तीन सुसमाचार, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, यीशु को एक आंख से देखते हैं।

अब दिलचस्प बात यह है कि आरंभिक चर्च ने मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच मतभेदों को देखा, और फिर भी उन्होंने उन्हें एक साथ नहीं जोड़ा। उन्होंने प्रत्येक गवाह को अनुमति दी, मैथ्यू अलग है, मार्क अलग है, ल्यूक अलग है। वे बहुत समान हैं, लेकिन उनमें अंतर हैं। आम तौर पर, यदि आप किसी प्रकार की सहमति चाहते हैं, तो आप ऐतिहासिक रूप से सोचेंगे, यदि पाठ लचीला था, या यदि पाठ लचीला था, तो आप लोगों से अपेक्षा करेंगे कि वे कहें, "ओह, हमें मैथ्यू और मार्क को सहमत करने की आवश्यकता है।" इसलिए जहाँ वे असहमत होते हैं, वहाँ लोग उन्हें अवैध रूप से सामंजस्य में रखते हैं। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने मतभेदों को छोड़ दिया; आरंभिक चर्च ने पाठ में मतभेदों को छोड़ दिया। यह मुझे इन दस्तावेजों की ऐतिहासिकता के बारे में कुछ बताता है। ऐसा नहीं था कि चर्च इन दस्तावेजों के साथ खेल रहा था, ये दस्तावेज बहुत लचीले हैं, और वे केवल किवंदंतियाँ हैं, जिन्हें एक साथ फिट करने के लिए बनाया गया है, और उन्हें बदल दिया गया है। नहीं, उन्होंने इसे उस तरह से नहीं देखा। उन्होंने अपने पास मौजूद दस्तावेजों को देखा और उन्हें वैसे ही रहने दिया। उन्होंने उन्हें उन जगहों पर भी खड़ा रहने दिया जहाँ बड़े संघर्ष हैं। उन्होंने संघर्षों को छोड़ दिया। उन्होंने उनमें सामंजस्य नहीं बनाया। इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि शुरुआती चर्च ने सुधार नहीं किया और सामंजस्य नहीं बनाया और इस तरह की चीजें नहीं कीं। उन्होंने उन्हें इन मतभेदों के साथ खड़ा रहने दिया, और हम एक मिनट में कुछ मतभेदों को देखेंगे।

यह पाठ की पवित्रता और ऐतिहासिक विश्वसनीयता में उनके विश्वास के बारे में क्या कहता है? पाठ की ऐतिहासिक विश्वसनीयता; हम, ईसाई होने के नाते, इतिहास से बहुत जुड़े हुए हैं। हमारा धर्मशास्त्र इतिहास से ही निकलता है। ऐसा नहीं है कि हमारा धर्मशास्त्र इतिहास को जन्म देता है, नहीं, यह इतिहास है, वास्तविक घटनाएँ घटित होती हैं; यीशु का जन्म बेथलहम में हुआ, यीशु ने गलील में सेवा की, और गलील में पानी पर चले, यीशु यरूशलेम में मरे और तीसरे दिन फिर से जी उठे। ये ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। दूसरे शब्दों में, ईसाई धर्म वास्तविक इतिहास पर आधारित है। फिर हमारा धर्मशास्त्र इतिहास से अलग हो जाता है। इसलिए इतिहास अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण

है। इसलिए, यीशु के बारे में बताने वाले उन तीन सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। उसी तरह जैसे यहूदी लोगों के लिए निर्गमन की पुस्तक और पंचग्रंथ उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं - मिस्र से बाहर आना और परमेश्वर द्वारा उन्हें एक मजबूत भुजा और शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर निकालना। और इसलिए नया नियम ऐतिहासिक रूप से बहुत विश्वसनीय है। उन्होंने चीजों को एक साथ नहीं जोड़ा; उन्होंने यह नहीं कहा कि ये एक साथ फिट नहीं होते इसलिए हम उन्हें बेहतर तरीके से फिट करने के लिए उनमें हेराफेरी करेंगे। उन्होंने उन्हें एक-एक करके खड़े रहने दिया।

के. सुसमाचार किंवदंती क्यों नहीं है: प्रत्यक्षदर्शी कहानियों की पुष्टि कर सकते हैं [33:52-38:48]

किंवदंती क्यों नहीं? ठीक है। सुसमाचार किंवदंती क्यों नहीं हैं, इस समस्या का एक हिस्सा यह है कि आपके पास मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के सुसमाचार हैं। मार्क ने संभवतः 60 ई. से पहले लिखा था और ल्यूक ने पॉल के मरने से पहले लिखा था, पॉल की मृत्यु लगभग 68 ई. में हुई, ल्यूक ने सबसे अच्छे थियोफिलस को लिखा, संभवतः प्रेरित पॉल के बचाव में। तो ल्यूक संभवतः 65 से पहले का है, मैथ्यू शायद उससे थोड़ा बाद का हो। लेकिन ये सभी लोग 70 ई. के समय सीमा से पहले लिख रहे हैं। क्योंकि इनमें से किसी भी सुसमाचार में मंदिर के विनाश का उल्लेख नहीं है और इसलिए आप जानते हैं, यह 70 ई. से पहले है। खैर, यही है, यीशु के 30-40 साल बाद। तो आप कहते हैं कि 30-40 साल में बहुत कुछ बदल जाता है। लेकिन समस्या यह है: क्या यीशु के बारे में पूरी किंवदंती बनने के लिए 30 या 40 साल का समय पर्याप्त है? उत्तर है: नहीं। समस्या यह है कि आपके पास अभी भी चश्मदीद गवाह हैं जो पुष्टि करते हैं कि यीशु ने ऐसा किया था या नहीं किया था। इसलिए प्रत्यक्षदर्शियों के कारण आप ज्यादा झूठ नहीं बोल सकते।

मुझे सोन्या वेइट्ज़ नाम की एक महिला की याद आती है। हमने उसे सालों तक गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाया था। डॉ. मार्व विल्सन, जो गॉर्डन कॉलेज में एक किंवदंती हैं, एक असाधारण शिक्षक और व्यक्ति जो यहाँ ओल्ड टेस्टामेंट में पढ़ाते हैं, उन्होंने बोस्टन के उत्तरी तट में यहूदी समुदाय के साथ एक वास्तविक एकीकरण विकसित किया है। और वह सोन्या वेइट्ज़ को जानते हैं

और वह एक नरसंहार से बची हुई है। वह साल में एक बार उठती थी, मार्च उसे अपने साथ लाता था, या पोली सोन्या वेइट्ज़ को लेकर आती थी और वह गॉर्डन कॉलेज में एक उत्तरजीवी होने पर एक व्याख्यान देती थी। और वह नरसंहार का वर्णन करती थी और वास्तव में मेरे पास इसका एक वीडियो है। वह नरसंहार का वर्णन करती थी और बताती थी कि उसके और उसकी बहन के लिए यह कैसा था; मुझे लगता है कि उसके परिवार के बाकी लोग नरसंहार में मारे गए। वह और उसकी बहन कुछ प्रमुख शिविरों में गईं - ऑशविट्ज़ या बिरकेनवाल्ड , या जो भी था - लेकिन वह उनमें से कई में गईं, एक ट्रेन में चढ़ी, दो सौ लोगों के साथ ट्रेन की एक बोगी में भरी गई और मूल रूप से पूरी तरह से अपमानित महसूस किया। और वह नरसंहार का वर्णन करती थी। इसमें क्या समस्या है, लोग नरसंहार को नहीं छिपा सकते क्योंकि अभी भी लोग जीवित हैं, जैसे सोन्या विएट्ज़ जिन्होंने नरसंहार को याद किया क्योंकि वह वहां थीं। इसलिए जब ईरान के अहमदीनेजाद जैसा एक पागल आदमी ईरान में उठता है और कहता है कि वास्तव में कोई नरसंहार नहीं था, यह यहूदियों द्वारा बनाया गया था। क्षमा करें, सोन्या विएट्ज़ वहां थीं।

वैसे, आइजनहावर, जनरल आइजनहावर, जब वे उन शिविरों को मुक्त करने गए, तो उन्होंने कहा कि लोग कभी भी विश्वास नहीं करेंगे कि यहाँ क्या हुआ था। और इसलिए उन्होंने उन सभी चीजों को दस्तावेज में दर्ज किया। उन्होंने तस्वीरें लीं और उन्होंने उस पूरी घटना को दस्तावेज में दर्ज किया क्योंकि उन्होंने कहा कि लोग कभी भी इस पर विश्वास नहीं करेंगे। इसलिए यह बहुत अच्छी तरह से प्रलेखित है। भले ही यह अच्छी तरह से प्रलेखित है, फिर भी आपके पास पागल लोग हैं जो कहते हैं कि ऐसा कभी नहीं हुआ और ऐसी बातें। इसलिए समस्या यह है कि आप उन लोगों की बातों को झूठा कह सकते हैं, क्योंकि सोन्या, वह वहाँ थी, वह एक प्रत्यक्षदर्शी थी, और वह इस तथ्य की गवाह है कि हिटलर के अधीन एकाग्रता शिविरों में रहना कैसा था। और इसलिए कोई भी उसे चुनौती नहीं दे सकता, यह उसका अनुभव था। वह वहाँ थी, वह और उसकी बहन।

तो फिर समस्याओं में से एक क्या है? समस्या यह है कि सोन्या की मृत्यु कुछ साल पहले ही हुई थी और इसलिए अब वह अपनी कहानी बताने नहीं आती और इसलिए यही होलोकॉस्ट के बहुत से बचे हुए लोगों के साथ हो रहा है, वे मर रहे हैं। इसलिए अब आपके पास यह गवाह नहीं है, और हम अब 2012 में हैं और होलोकॉस्ट 1940 के दशक में हुआ था, इसलिए हम 60 या 70 साल

पहले की बात कर रहे हैं और इसलिए ये लोग मर रहे हैं।

मार्क और मैथ्यू और ल्यूक के साथ, आप अभी भी बीस, तीस, चालीस साल की सीमा में हैं, इसलिए ऐसे बहुत से लोग हैं जो वास्तव में इन घटनाओं के गवाह हो सकते हैं। तो मैं बस इतना ही कह रहा हूँ। तो आपके पास किंवदंती के लिए समय नहीं है। आपके पास बहुत से लोग हैं जैसा कि पॉल 1 कुरिन्थियों 15 में कहता है, 500 लोग थे जिन्होंने मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु को जीवित देखा था। 500 गवाह थे। बारह के साथ-साथ, और महिलाओं के साथ-साथ, इम्मौस रोड से ये दो लोग भी थे। तो एक व्यक्ति के यह कहने से पहले कि यह वास्तव में हुआ था, कितने गवाहों की आवश्यकता होती है? आपके पास दो गवाह हैं, आप बहुत अच्छे हैं। आपके पास एक गवाह है, आप सोच सकते हैं, आपके पास दो गवाह हैं, इससे संभावना काफी बढ़ जाती है। जब आपको एक समय में ग्यारह, बारह गवाह मिलते हैं तो आपको क्या मिलता है, जब आपको एक ही समय में, अलग-अलग जगहों, अलग-अलग समय और अलग-अलग सेटिंग्स में 500 गवाह मिलते हैं तो क्या होता है?

तो इम्मौस रोड पर, वह शायद पहले कभी इम्मौस रोड पर नहीं गया था, पवित्रशास्त्र में इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है, और इसलिए इन लोगों का इस क्षेत्र में यीशु के साथ कोई संबंध नहीं है। फिर भी यीशु इम्मौस के रास्ते पर उनसे मिलते हैं। तो ये दो गवाह हैं। तो यह सिर्फ एक नहीं है। तो यह किंवदंती नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है।

एल. सुसमाचार की ऐतिहासिकता का प्रमाण: कुरूप सत्य [38:48-43:40]

अब चीजें छिपी नहीं रहेंगी। शिष्यों, यदि आप यीशु के बारे में एक सुसमाचार लिख रहे हैं, तो क्या आप एक प्रेरित के रूप में, यदि आप बारह लोगों में से एक होते, तो क्या आप प्रेरितों द्वारा की गई सभी मूर्खतापूर्ण बातें बताते? यीशु उनके साथ नाव में हैं और उनसे कहना शुरू करते हैं, फरीसियों के खमीर से सावधान रहें और शिष्य कहने लगते हैं, "हम रोटी लेना भूल गए, और यीशु हम पर गुस्सा हो रहे हैं क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था। इसलिए वह फरीसियों के खमीर के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में यह है कि वह भूखे हैं क्योंकि हम रोटी भूल गए हैं।" और यीशु कहते हैं, "अरे, समझो। अगर मुझे रोटी चाहिए, तो माफ़ करना, मैंने अभी कितने

लोगों को खाना खिलाया? मैंने अभी 5000 लोगों को खाना खिलाया है, अगर मुझे रोटी चाहिए तो मैं रोटी बना सकता हूँ, स्वर्ग से मन्ना। भगवान ने स्वर्ग से मन्ना दिया। अगर मुझे स्वर्ग से मन्ना चाहिए तो मैं ऐसा कर सकता हूँ। और वह शिष्यों से कहते हैं, "तुम नहीं समझते," और इसलिए शिष्यों को किसी बिंदु पर धोखा दिया जाता है, बार-बार यीशु को नहीं समझते, वे बस इसे नहीं समझते। इसलिए यदि आप ही इसे लिख रहे थे और आप प्रेरितों में से एक थे, तो क्या आप इस तरह की कहानियों को नहीं हटाएँगे? जिन लोगों के साथ आप उन वर्षों में घूमते थे, उनमें से कई लोग जो अब बाहर जाने, सुसमाचार फैलाने, मारे जाने की प्रक्रिया में हैं, और क्या आप उनके बारे में ऐसी नकारात्मक कहानियाँ बताएँगे? फिर भी सुसमाचार शिष्यों को तब उजागर करते हैं जब वे इसे नहीं समझ पाते। यीशु कर संग्रहकर्ताओं के साथ खाते हैं। आप सोचेंगे कि वे उसकी स्थिति को बढ़ाना चाहेंगे और उसे मरियम जैसी इन नाजायज़ महिलाओं के साथ घूमने के बजाय मैग्डलीन और कर संग्रहकर्ता। आप उसे हेरोदेस और कैफा, महायाजक और पोंटियस पायलट के साथ रखेंगे, आप उसे बड़े लोगों के साथ घूमते हुए देखेंगे। इसके बजाय, यीशु किसके साथ घूमता है? ये कर संग्रहकर्ता और पापी और हम उनमें से कई के नाम भी नहीं जानते, लेकिन यीशु की सामरियों के बीच प्रतिष्ठा थी। फिर से वही बात, अगर आप एक अच्छे यहूदी व्यक्ति हैं, तो आप सामरियों को क्यों पेश करेंगे जब आप जानते हैं कि यह सभी यहूदियों के लिए अपमानजनक है। और फिर भी सुसमाचार इस पर वापस आते हैं - यीशु सामरियों के साथ घूमता था। यह आपको एक सच्चा इतिहास देता है, भले ही यह जानते हुए भी कि सच्चा इतिहास कुछ लोगों के लिए अपमानजनक होने वाला है। दूसरे शब्दों में, यीशु जरूरी नहीं कि राजनीतिक रूप से सही थे। इसलिए वह सामरियों के साथ अपने संबंधों के बारे में बात करता है, यह जानते हुए भी कि इससे विरोध होगा, शिष्यों का अविश्वास, उसके अपने शिष्यों ने उन पर विश्वास नहीं किया।

उसका अपना परिवार आ रहा है और कुछ बिंदुओं पर यीशु को ले जाने के लिए आ रहा है, जेम्स और जोसेफ, और उसकी अपनी माँ, वे तुम्हें ले जाने के लिए आ रहे हैं, दूर। इसलिए वे यीशु को ले जाने के लिए आते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह पागल है। उसके अपने भाई, दूसरे अंश में पढ़ते हुए, वे थे, यह जॉन की पुस्तक से है, जॉन पर कूदने के लिए क्षमा करें। जॉन में वे झोपड़ियों के पर्व पर जा रहे हैं, और उसके भाई कहते हैं, "हे, यीशु, तुम अपने चमत्कार क्यों नहीं करते जो तुम

करते हो, तुम यरूशलेम क्यों नहीं जाते और सभी को ये चमत्कार क्यों नहीं दिखाते जो तुम करते हो।" जॉन में वर्णनकर्ता कहता है, "क्योंकि उसके अपने भाई उस पर विश्वास नहीं करते थे।" उन्होंने कहा, "यरूशलेम जाओ और ये चमत्कार करो; क्योंकि वे उस पर विश्वास नहीं करते थे।" यदि आप किसी नायक के बारे में इतिहास लिख रहे हैं, तो आप उन चीजों को छिपा देंगे।

पतरस ने प्रभु को अस्वीकार किया। पतरस प्रारंभिक चर्च में सबसे बड़े लोगों में से एक है। यह प्रेरित पतरस है। "इस चट्टान पर, पतरस, मैं अपना चर्च बनाऊंगा।" फिर भी सभी सुसमाचारों में पतरस द्वारा तीन बार प्रभु को अस्वीकार करने का उल्लेख है। यह किस तरह का इतिहास है? क्या आप अपने मित्र पतरस की बातों को छोड़कर यह नहीं कहेंगे कि ठीक है, उसने कुछ गलतियाँ कीं? आप अपने इतिहास को लिखने के तरीके में अपने मित्रों की गलतियों को शामिल नहीं करते। फिर भी सुसमाचार में पतरस द्वारा प्रभु को अस्वीकार करने का वर्णन है। क्रूस पर चढ़ाए जाने से ठीक पहले, तीन बार, सिर्फ़ एक बार नहीं बल्कि तीन बार। इसके बाद पतरस बाहर जाता है और इस वजह से रोता है। आम तौर पर, आप इस तरह की बातों को छिपाते हैं। मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि सुसमाचार हमें सटीक इतिहास देते हैं और वे अच्छे, बुरे और बदसूरत को सामने लाते हैं। वहाँ कुछ बदसूरत चीज़ें हैं और वे उन्हें सामने लाते हैं। तो यह वास्तविक इतिहास है, यह बना-बनाया इतिहास नहीं है। यह आदर्श, किंवदंती वाला इतिहास या पौराणिक इतिहास नहीं है जहाँ वे इस मिथक को बनाते हैं जहाँ वे यीशु को इस मिथक में बदल देते हैं। नहीं, वे आपको वास्तविक इतिहास देते हैं। इसलिए ऐतिहासिक विश्वसनीयता; डेनवर सेमिनरी में क्रेग ब्लॉमबर्ग ने एक बहुत अच्छी किताब लिखी है, सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर 4-5 सौ पेज की किताब। यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण किताब है। वह सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में बहुत कुछ बताता है। क्रेग ब्लोमबर्ग की पुस्तक, *हिस्टोरिकल रिलायबिलिटी ऑफ़ द गॉस्पेल्स*, वास्तव में पढ़ने लायक है।

एम. समानताएँ: एक साझा व्यापक कालक्रम [43:40-45:47]

ई: संयुक्त एमओ; 43:40-53:47; संक्षिप्त समानताएं, भाग 1

तो अब आइए यहाँ कुछ समकालिक सुसमाचारों पर नज़र डालें। कुछ समानताएँ। हमने

कहा कि समकालिक सुसमाचारों , मैथ्यू मार्क और ल्यूक में समानताएँ और अंतर होंगे। समानताएँ, वे हमें परेशान नहीं करतीं और इसलिए आइए पहले उन पर नज़र डालें। वे बहुत आसान हैं लेकिन मैं उनमें से कुछ को सामने लाना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह जानना महत्वपूर्ण है कि समानताएँ किस स्तर पर होती हैं।

इसमें एक तरह की व्यापक कालानुक्रमिक समानता है। सभी सुसमाचारों में यह व्यापक कालानुक्रमिक ढांचा है। यीशु का जन्म यहूदिया के बेथलेहम में हुआ। वह नासरत में बड़ा हुआ। इसलिए बेथलेहम में पैदा हुआ यीशु नासरत जाता है। नासरत वह जगह है जहाँ वह अपने पिता जोसेफ के अधीन एक बढ़ई के रूप में बड़ा हुआ। यह सब उसकी प्रारंभिक सेवकाई है, सेवकाई नहीं, बल्कि नासरत में बड़ा हुआ यीशु।

और फिर यीशु गलील की झील पर जाता है और वह शिष्यों को बुलाता है और अपनी सेवकाई करता है और पानी पर चलता है और पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाता है, पहाड़ पर उपदेश देता है, तरह-तरह की चीज़ें करता है, कोढ़ियों को ठीक करता है, और दुष्टात्माओं से ग्रसित लोगों को निकालता है। इसलिए यीशु नासरत से गलील जाता है। गलील ही वह जगह है जहाँ उसने अपनी ज़्यादातर सेवकाई की और फिर गलील से वह यरूशलेम चला गया।

जब वह यरूशलेम जाता है, तो वह अंत के लिए तैयार हो जाता है। पैशन वीक में वह यरूशलेम जाएगा और यरूशलेम ही वह जगह है जहाँ उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा। इसलिए उन सभी ने यीशु की मृत्यु देखी, तीन दिन बाद उसका पुनरुत्थान हुआ।

तो यह व्यापक ऐतिहासिक रूपरेखा है, नासरत से गलील, शिष्यों के साथ गलील की सेवकाई, और चमत्कार, दृष्टांत, शिक्षाएँ और अंत के लिए यरूशलेम की ओर खिसकना, और फिर यरूशलेम में पैशन वीक का आना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, मरना और दफन होना, और तीन दिन बाद मृतकों में से जी उठना। सभी सुसमाचारों में एक ही व्यापक कालक्रम है। ठीक है, तो, और फिर से, हम जो कुछ भी हुआ उसके रिकॉर्डिंग में आश्चर्यचकित नहीं हैं, और वे सभी उस व्यापक कालक्रम पर सहमत हैं।

एन. समानताएँ: लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा करना [45:47-49:44]

कई अंशों के कुछ शब्द बिल्कुल एक जैसे हैं। बिल्कुल सटीक होने के बिंदु तक। तो यहाँ हमारे पास क्या है और मैं सिर्फ लकवाग्रस्त व्यक्ति के चमत्कार को देखना चाहता हूँ। तो यह लकवाग्रस्त व्यक्ति; मुझे बस इस कहानी को प्रेम करने दें, आप सभी इस कहानी को जानते हैं। यीशु इस घर में हैं और वहाँ भीड़ है और ये लोग इस अपंग व्यक्ति को ला रहे हैं और उसे उसके चार दोस्त लेकर आए हैं। तो उसके चार दोस्त उसे एक चटाई पर ले जा रहे हैं और भीड़ के कारण वे यीशु से मिलने नहीं जा पा रहे हैं। तो वे क्या करने जा रहे हैं? उनके पास एक अपंग व्यक्ति है, उन्हें उसे यीशु के पास ले जाना है ताकि यीशु उसे ठीक कर सकें। वे छत पर चढ़ जाते हैं, वे छत को अलग कर देते हैं। उस संस्कृति में छतें सपाट होती थीं, और वे मूल रूप से मिट्टी और शाखाओं और ऐसी ही चीज़ों से बनी सपाट छत होती थीं। उनके पास न्यू इंग्लैंड की तरह अच्छी छतें और खड़ी छतें नहीं थीं। सपाट छतें। वे ऊपर जाते हैं और छत को अलग कर देते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु वहाँ बैठे हैं और उन पर इतनी सारी मिट्टी गिर रही है।

लेकिन, फिर भी, फिर वे इस आदमी को छत से नीचे यीशु के सामने गिरा देते हैं। यीशु उस आदमी को देखता है और हर कोई उम्मीद करता है कि यीशु कहेगा, "उठो और चलो।" यीशु ऐसा नहीं कहता। यीशु कभी भी वह नहीं करता जो आप उम्मीद करते हैं और इसलिए यीशु उस आदमी को देखता है और कहता है, "तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं।" कुछ लोग घबरा जाते हैं और कहते हैं, "वाह, भगवान के अलावा और कौन पापों को क्षमा कर सकता है।" बिल्कुल सही बात, और यीशु कहते हैं, "तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं," और कहते हैं, "कौन सा कहना कठिन है, 'तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं' या 'अपनी चटाई उठाओ, अपनी चटाई उठाओ और चलो'?" जाहिर है कि अपनी चटाई उठाकर चलना यह साबित करता है कि वह पापों को क्षमा कर सकता है। इसलिए यीशु कहते हैं, "अपनी चटाई उठाओ, उठो, यहाँ से चले जाओ।" वह आदमी खड़ा होता है, बाहर चला जाता है। वैसे, एक छोटे शहर में, क्या शहर के सभी लोग जानते होंगे कि यह आदमी अपंग था? मुझे नहीं पता कि वह अपंग कैसे बना और परिवार के साथ पूरी स्थिति क्या थी, लेकिन छोटे शहरों में हर कोई सब कुछ जानता है। तो यह आदमी बाहर चला जाता है और वे सभी दंग रह जाते हैं। यह एक लकवाग्रस्त व्यक्ति की कहानी है।

हम यहां जो देख रहे हैं वह यह है कि मैं शब्दों के विशेष पाठ को देखना चाहता हूँ और यह

मैथ्यू 9: 6 है, और यह कहता है "ताकि आप जान सकें कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," [पाठ में विराम]। "ताकि आप जान सकें कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," फिर विराम, वह विराम देता है, "ताकि आप जान सकें कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," फिर वह कहने के बाद ठीक उसी बिंदु पर लकवाग्रस्त व्यक्ति की ओर मुड़ता है, "ताकि आप जान सकें" फिर वह मुड़ता है और "वह लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहता है, 'उठो और चलो।'" तो यहां एक विराम है और मैं उस विराम को देखना चाहता हूं जहां वह भीड़ से बात करना बंद कर देता है और वह इस आदमी की ओर मुड़ता है जो लकवाग्रस्त है और ठीक वैसा ही होता है।

अगर आप मार्क के अध्याय 2 को देखें, तो उसमें लिखा है "लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है..." और फिर, ठीक उसी जगह पर, "वह लकवाग्रस्त व्यक्ति की ओर मुड़ता है और कहता है, 'अपनी खाट उठाओ और यहाँ से चले जाओ।'" तो ब्रेक बिल्कुल उसी बिंदु पर है। और फिर, बेशक, हम समानताएँ दिखा रहे हैं और लूका 5:24। इसमें लिखा है "लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है..." ब्रेक "ताकि तुम जान सको" वह लकवाग्रस्त व्यक्ति की ओर मुड़ता है और कहता है "उठो और चलो"

तो आप देख सकते हैं कि इन तीनों कथाओं में यीशु बिल्कुल एक ही बिंदु पर टूटते हैं। मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि ये समकालिक सुसमाचार हैं। वे कहानियाँ बताते हैं, इनमें से बहुत सी कहानियाँ, वे उन्हें बिल्कुल एक ही तरीके से बताते हैं। शब्द बिल्कुल एक जैसे हैं, यहाँ तक कि भीड़ को संबोधित करने और लकवाग्रस्त व्यक्ति की ओर मुड़ने में भी हरकतें बिल्कुल एक ही बिंदु पर हैं। और इसलिए यह तीनों सुसमाचारों की पुष्टि है जिस तरह से यह वहाँ हुआ। तो अब यह एक समानता है।

ओ. समानताएँ: जॉन द बैपटिस्ट [49:44-53:47]

यहाँ एक और समानता है। यह जॉन द बैपटिस्ट के बारे में उद्धरण है। जॉन द बैपटिस्ट जो यीशु के शुरुआती अग्रदूत हैं, वे एलियाह हैं जो आने वाले थे। यीशु ने कहा कि यदि आप इसे प्राप्त

करते हैं, तो यह एलियाह है जो मसीहा के आने की बात पढ़ रहा है। तो जॉन द बैपटिस्ट यह पुराने नियम का उद्धरण है, और इसलिए यह कहता है "यह वह है जिसके बारे में भविष्यवक्ता यशायाह के माध्यम से कहा गया था, 'रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़।'" और वह क्या कहता है "प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।" तो रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़ है। जॉन कहाँ रहता था? जॉन रेगिस्तान में रहता था। उसने टिड्डे और जंगली शहद खाया और वह रेगिस्तान में रहता था। तो यह कह रहा है, यशायाह ने कहा, मुझे विश्वास है कि यह यशायाह 40 है, और उसने कहा, "रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़।" तो वह रेगिस्तान में है, और वह क्या कहता है? "प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।" यह LXX से लिया गया उद्धरण है, या जिसे सेप्टुआजेंट कहा जाता है। सेप्टुआजेंट पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद है जो लगभग 200-100 ईसा पूर्व में किया गया था। मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता कि LXX का अनुवाद वास्तव में कब हुआ था, लेकिन लगभग 200-100 ईसा पूर्व। सेप्टुआजेंट, वास्तव में थोड़ा पहले का है। फिर, मैथ्यू 3:3, मार्क 1:3, और ल्यूक 3:4 पर ध्यान दें, ठीक है तो मूल रूप से, मैथ्यू और ल्यूक में 3:4 और 3:3 एक ही अध्याय में हैं। इसमें यह उद्धरण है, और वे सभी सेप्टुआजेंट से उद्धृत हैं।

उनमें से कोई भी पुराने नियम में मसोरेटिक पाठ से उद्धरण का उपयोग नहीं करता है। मसोरेटिक पाठ [एमटी] क्या है? मसोरेटिक पाठ हिब्रू पुराना नियम है, या जिसे हम एमटी कहते हैं। एमटी मसोरेटिक पाठ है, हिब्रू पाठ जो मसोरेट्स नामक शास्त्रियों के एक समूह द्वारा संरक्षित किया गया है। यह हिब्रू है जिसे बहुत सारे पुराने नियम के विद्वान पढ़ना सीखते हैं। वे ग्रीक पढ़ना भी सीखते हैं ताकि वे सेप्टुआजेंट पढ़ सकें और ग्रीक और हिब्रू की तुलना कर सकें। हम देख सकते हैं कि अनुवादकों ने, लगभग 200 ईसा पूर्व में, उनके बीच अनुवाद का काम कैसे किया। लेकिन यह दिलचस्प है कि जब सुसमाचार लेखक इसे उद्धृत करने जाते हैं, तो वे सभी सेप्टुआजेंट से उद्धृत करते हैं। वे सभी फिर हिब्रू ग्रंथों से उद्धरण नहीं देते हैं।

यशायाह 40:3 से इस अंश को इस प्रकार तैयार किया गया है: "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु के लिए राजमार्ग तैयार करो।" और आप वहाँ अंतर देखते हैं? यह कह रहा है, "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़" और वह क्या कहता है? वह कहता है, "जंगल में प्रभु के लिए मार्ग

तैयार करो।" तो यह प्रभु का मार्ग है जो रेगिस्तान में होने वाला है। लेकिन जब आप सेप्टुआजेंट में देखते हैं तो यह कहता है, "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़" तो पहले मामले में, सेप्टुआजेंट में, यह वह व्यक्ति है जो पुकार रहा है, जो रेगिस्तान में है। जबकि मसोरेटिक पाठ में, यह बस है: "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़।" और वह क्या पुकारता है? "जंगल में प्रभु का मार्ग तैयार करो।" यह प्रभु का मार्ग है जो रेगिस्तान में है। तो एक में, वक्ता रेगिस्तान में है। और वह पुकारता है, "प्रभु का मार्ग तैयार करो।" दूसरे में, यह "जंगल में प्रभु का मार्ग तैयार करो" है। तो प्रभु का मार्ग जंगल में है। तो ये निश्चित रूप से सेप्टुआजेंट और हिब्रू मसोरेटिक पाठ के बीच अलग-अलग रीडिंग हैं।

तो फिर यह क्या कह रहा है कि तीनों सुसमाचार, समकालिक सुसमाचार, वे सभी सेप्टुआजेंट पर स्विच करते हैं और सभी वहाँ पाठ के हिब्रू पढ़ने को अनदेखा करते हैं। इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि तीनों इस पर सहमत हैं। यह शब्द दर शब्द, शब्द परिपूर्ण है, एक सॉफ्टवेयर पैकेज को उद्धृत करने के लिए - शब्द परिपूर्ण। ये आश्चर्यजनक समानताएँ हैं जो बिल्कुल शब्द दर शब्द एक जैसी हैं, बहुत समान हैं।

पी. समानताएँ: वेस्टकॉट के प्रतिशत सुसमाचार की तुलना करते हुए [53:47-57:30]

एफ. संयुक्त पीक्यू; 53:47-59:29; संक्षिप्त समानताएँ

अब मैं वेस्टकॉट नाम के इस व्यक्ति के साथ काम करना चाहता हूँ जिसने तुलनाएँ दिखाई और हम देखना चाहते हैं कि कितनी चीज़ें समान हैं, कितनी चीज़ें अलग हैं। और इसलिए मैं इस तरह का एक चार्ट बनाना चाहता हूँ, और हम देखेंगे कि ल्यूक या मार्क का कितना हिस्सा अलग था और मार्क का कितना हिस्सा दूसरे सुसमाचारों से समान था। इसलिए अंतर दूसरे सुसमाचारों से अलग होने जा रहे हैं। समानताएँ तब होंगी जब वे ओवरलैप होंगी, जब वे समान होंगी।

मार्क में, मार्क का सात प्रतिशत मार्क के लिए अद्वितीय है। मार्क का सात प्रतिशत अन्य सुसमाचारों से अलग है, इसलिए इसका मतलब है कि यदि आप मार्क की पुस्तक खो देते हैं, तो आप कितना खो देंगे। आप लगभग सात प्रतिशत खो देंगे। इसका मतलब है कि मार्क का 93%, यह बहुत बड़ा है, अन्य सुसमाचारों में पाया जाता है। आज बहुत से नए नियम के विद्वान, इस पर कुछ

मतभेद हैं, इस पर कुछ तर्क हैं, कई नए नियम के विद्वान मार्कन प्राथमिकता को मानते हैं। दूसरे शब्दों में, मार्क पहले आया और मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क का उपयोग किया। तो मार्क पहले आया और फिर मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क का उपयोग किया। वे इसे मार्कन प्राथमिकता कहते हैं। मार्क पहले आया। यहाँ एक कारण है कि वे ऐसा क्यों करते हैं, निश्चित रूप से एकमात्र कारण नहीं, लेकिन उनमें से एक। मार्क का इतना अधिक हिस्सा अन्य सुसमाचारों में पाया जाता है, इसका 93% मैथ्यू और ल्यूक में पाया जाता है। यह अविश्वसनीय है। इसलिए मार्क का अधिकांश हिस्सा कहीं और पाया जाता है।

अब मैथ्यू का 42% हिस्सा उनके लिए अद्वितीय है, और मैथ्यू का 58% हिस्सा समान है। इसलिए मैथ्यू अन्य सुसमाचारों के साथ 58% साझा करता है। 42% अद्वितीय है। तो 42% काफी है। ठीक है, तो आप देखिए, ओलिवेट प्रवचन और अन्य चीजें, मैथ्यू में वे अद्वितीय हैं।

ल्यूक, आप देख रहे हैं कि यह बढ़ रहा है। ल्यूक अब लगभग 60% अद्वितीय है, लेकिन फिर भी, 41% मूल रूप से, अन्य सुसमाचारों में पाया जाता है। तो ल्यूक लगभग 60/40 है। 60% अद्वितीय, लेकिन 40% ओवरलैप। इसलिए ल्यूक का काफी हिस्सा अन्यत्र पाया जाता है और इसलिए ये तीनों सुसमाचार, अब आप देखते हैं, एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं, खासकर मार्क।

अब आइए जॉन को देखें। हमने कहा कि जॉन समकालिक सुसमाचारों में से एक नहीं है। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक समकालिक सुसमाचार हैं। जॉन पूरी तरह से अलग है। जॉन 92% अद्वितीय है। क्या आप इसे देखते हैं? इन तीनों की तुलना में यह अविश्वसनीय है। आप देख सकते हैं कि ये तीनों समान क्यों हैं और जॉन का 92% कहीं और नहीं मिलता है, जो जॉन के लिए पूरी तरह से अद्वितीय है। जॉन की पुस्तक का केवल 8% अन्य तीन सुसमाचारों में पाया जाता है। इसलिए जॉन आपको एक अलग दृष्टिकोण दे रहा है। यह वास्तव में दिलचस्प है कि जॉन और मार्क की भूमिकाएँ लगभग उलट हैं। जॉन का 8% प्रतिशत अन्य सुसमाचारों के समान है लेकिन देखिए, मार्क केवल 7% ही अद्वितीय है। मार्क में केवल 7% है, मार्क का अधिकांश भाग कहीं और पाया जाता है और इसलिए उनके साथ लगभग एक फ्लिप फ्लॉप जैसा है। लेकिन जॉन बहुत अद्वितीय है। तो ये तीन समकालिक सुसमाचार हैं, और यह एक, जॉन है, ठीक है, जॉन जॉन है। तो यह तुलना है कि इसमें

कितना ओवरलैप है और हमने कहा कि मार्क के साथ बहुत अधिक ओवरलैप है, और जॉन के साथ इतना नहीं।

प्र. समानताएँ: संक्षिप्त ओवरलैप [57:30-59:29]

इसे देखने का एक और तरीका यह है। आप हाई स्कूल के दिनों से इन वेन डायग्राम का उपयोग कर सकते हैं। शायद वेन डायग्राम की इस सामग्री को भूलने की कोशिश की हो, लेकिन यह वास्तव में इन तीन चीजों की तुलना करने में बहुत उपयोगी है। तो आपके पास मार्क है, मार्क के केवल 50 छंद अद्वितीय हैं, मैथ्यू के 280 हैं, ल्यूक के 500 अद्वितीय हैं। तो आप देख सकते हैं कि तीनों में से ल्यूक सबसे अनूठा है। मार्क सबसे अनूठा नहीं है, और मैथ्यू के पास अपनी खुद की पर्याप्त सामग्री है। यहाँ 480 खंड हैं। 480 खंड जो ओवरलैप करते हैं। तीनों में ये 480 समानताएँ हैं, आम हैं। वे ओवरलैप करते हैं। फिर यहाँ, मार्क और मैथ्यू के बीच, मार्क और मैथ्यू के बीच लगभग 180 खंड साझा किए गए हैं, लेकिन ल्यूक में नहीं। यह ल्यूक के बाहर है। यह सिर्फ मैथ्यू और मार्क द्वारा साझा किया गया है, 180 खंड हैं। मैथ्यू के बाहर मार्क और ल्यूक लगभग 20 को अद्वितीय रूप से साझा करते हैं, इसलिए यह बिल्कुल भी बहुत अधिक नहीं है। लूका ने मार्क के साथ 20 खंड साझा किए, और फिर 170 इकाइयाँ मैथ्यू और ल्यूक द्वारा साझा की गईं, लेकिन मार्क में नहीं। इसलिए मार्क में जो कुछ भी है, उसका अधिकांश हिस्सा अन्यत्र पाया जाता है, केवल 50 छंद, या 50 खंड। अब 170, मैथ्यू और ल्यूक के बीच साझा किए गए हैं, लेकिन मार्क में नहीं हैं। हम इस 170 को "क्यू" कहते हैं। हम इसे एक मिनट में देखेंगे कि क्यू क्या है। हम इसे केले [क्यू] कहने जा रहे हैं, "स्रोत" जिसे साझा किया जाता है। यह यहाँ क्यू की सामग्री है, जिसे मैथ्यू और ल्यूक द्वारा साझा किया गया है, लेकिन मार्क में नहीं है। तो यह मार्क के बाहर है और इसे ही वे क्यू स्रोत कहते हैं। इसलिए यदि यह मैथ्यू और ल्यूक में है, लेकिन मार्क के पास नहीं है। मैथ्यू और ल्यूक ने उस क्यू स्रोत का उपयोग यह साबित करने के लिए किया कि वहाँ 170 खंड हैं।

आर. सिनॉटिक गॉस्पेल में अंतर: मसीह के प्रलोभन का क्रम [59:29- 63:01]

जी: संयुक्त आरएस; 59:29-68:15; संक्षिप्त अंतर, भाग 1

अब, हम समकालिक सुसमाचारों में अंतरों पर आगे बढ़ेंगे। हमने समानताओं के बारे में बात की है और समानताएँ आमतौर पर कोई समस्या नहीं होती हैं। जब हम समानताएँ दिखाते हैं तो हर कोई समानताओं से सहमत होता है लेकिन अंतर लोगों को समस्याएँ पैदा करते हैं। और इसे समकालिक समस्या कहा जाता है। आप अंतरों के साथ क्या करते हैं? एक अंतर घटनाओं के क्रम का होगा। घटनाओं का क्रम, मुझे लगता है, महत्वपूर्ण है।

क्या आपको मसीह के प्रलोभन याद हैं? लगभग सभी सुसमाचारों में मसीह की शुरुआत यहीं से होती है। परमेश्वर की आत्मा मसीह को जंगल में ले जाती है, जहाँ वह जंगल में चालीस दिन और चालीस रात उपवास करता है। ये लूका 4 और मत्ती 4 में प्रलोभन के क्रम हैं। यहाँ क्रम है। दोनों, ये दोनों सुसमाचार शैतान के साथ शुरू होते हैं जो यीशु के पास आता है और कहता है “अरे, क्या तुम भूखे हो? इन पत्थरों को रोटी में बदल दो।” और यीशु ने क्या कहा? “मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता है।” यीशु ने व्यवस्थाविवरण से उद्धरण दिया। दरअसल, तीनों बार शैतान ने उसे लुभाया, उसने व्यवस्थाविवरण 4 से अध्याय 11, या अध्याय 8, व्यवस्थाविवरण के उस भाग में कुछ ऐसा ही उद्धृत किया। तो दोनों सुसमाचार लेखक चट्टानों से रोटी तक की बात शुरू करते हैं। और आप कहते हैं कि इसमें कोई समस्या नहीं है और यह सही है, इसमें कोई समस्या नहीं है।

दूसरे के बारे में क्या? मैथ्यू में, यह कहा गया है कि शैतान यीशु को मंदिर के शिखर पर ले गया और मूल रूप से कहा, “यीशु, भजन कहते हैं कि यदि आप खुद को नीचे फेंकते हैं तो उसके स्वर्गदूत आपको उठा लेंगे, ताकि आप अपने पैरों को पत्थर से न टकराएं।” और यीशु मुड़ते हैं और कहते हैं, “अपने भगवान को मत परखो।” यीशु का जवाब फिर से व्यवस्थाविवरण से है। शैतान यहाँ शास्त्र का हवाला दे रहा है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, शैतान वास्तव में शास्त्र का हवाला देता है। वह कहता है “शिखर, शिखर से कूदो, और स्वर्गदूत तुम्हें उठा लेंगे।”

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि लूका, दूसरी ओर, राज्यों के बारे में बात करता है। शैतान उसे दूसरे प्रलोभन के लिए पहाड़ पर ले जाता है, और पहाड़ की ऊँचाई पर, उसे दुनिया के सभी राज्य दिखाता है और कहता है, “मैं ये सब चीजें तुम्हें दे दूँगा अगर तुम झुककर मेरी पूजा करोगे” और यीशु कहते हैं, “तुम्हें केवल अपने परमेश्वर यहोवा की पूजा करनी चाहिए” फिर से व्यवस्थाविवरण से उद्धृत करते हुए। तो यहाँ पहाड़ की चोटी पर राज्य दिखाए गए हैं और दुनिया

के राज्य हैं और पूजा के लिए आह्वान करते हैं। तो आप देख सकते हैं कि क्रम अलग है। इनमें से प्रत्येक में तीन प्रलोभन हैं। लेकिन तीन प्रलोभन, संख्या दो और तीन को बदल दिया गया है या पलट दिया गया है। तो मैथ्यू, मैथ्यू यीशु को पहाड़ पर ले जाने और दुनिया के सभी राज्यों को दिखाने के साथ समाप्त होता है, और कहता है, "ये सभी राज्य मैं तुम्हें दे दूँगा अगर तुम झुककर मेरी पूजा करोगे।" यीशु कहते हैं, "नहीं, केवल भगवान की पूजा करो।" मैथ्यू राज्यों के साथ समाप्त होता है, जबकि ल्यूक शिखर कूद के साथ समाप्त होता है। "इस शिखर से कूद जाओ और उसके स्वर्गदूत तुम्हें ऊपर ले जाएँगे।" तो मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि मसीह के तीन प्रलोभन, जब उसे जंगल में शैतान द्वारा लुभाया जाता है, नंबर दो और तीन उलट-पुलट हो जाते हैं। क्रम अलग है। तो कौन सा वास्तविक क्रम है? वास्तविक ऐतिहासिक क्रम कौन सा है?

एस. कहानी कहने के कई तरीके हैं [63:1-68:15]

अब मैं इसमें एक और बात जोड़ना चाहता हूँ। क्या यह संभव है कि लेखक मसीह के इस प्रलोभन के क्रम का उपयोग बयान देने के लिए कर रहा है? दूसरे शब्दों में, क्या लेखक ने अपनी कहानी को उस माहौल के हिसाब से ढाला है जो वह कहना चाह रहा है। मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ, वह है, हाँ। क्या आप लोग कहानी सुनाना पसंद करते हैं? जब कोई व्यक्ति कहानी सुनाता है, तो क्या वह इसे अलग-अलग तरीकों से बताता है जो दर्शकों पर निर्भर करता है? हमारे पास गॉर्डन कॉलेज में डॉ. ग्रीम बर्ड नाम का एक व्यक्ति है, वह एक पियानोवादक है जो शास्त्रीय पियानो, पियानो बजाता है, और वह एक अविश्वसनीय पियानोवादक है। वह एक शास्त्रीय विद्वान भी है, होमर और ग्रीक और उस तरह की चीजों का अध्ययन करता है, साथ ही एक भाषाविद् भी है। और कंप्यूटर में भी शामिल है। वह एक तरह से पुनर्जागरण प्रकार का व्यक्ति है। दुनिया में अभी भी ऐसे कुछ लोग बचे हुए हैं। यह बहुत दिलचस्प है, वह बैठता है और वह जो कहता है उसे जैज़ कहता है। और इसलिए वह जैज़ पर इस रूपक के साथ बैठता है और इसलिए जो होता है वह कुछ इस तरह बजाता है, चलो "अमेजिंग ग्रेस" जैसा कोई गाना लेते हैं। "अमेजिंग ग्रेस, कितनी मधुर ध्वनि है, जिसने मुझ जैसे दुखी को बचाया।" तो वह इसे बजाएगा, और फिर वह जो करेगा वह यह है कि वह "अमेजिंग ग्रेस" गाना लेगा, और वह इसे शास्त्रीय शैली में बजाएगा। बीथोवेन या मोजार्ट की शैली

में, और अचानक आप उसे ऐसा करते हुए सुनेंगे और यह सुनाई देगा, आप पहचान लेंगे कि यह "अमेजिंग ग्रेस" है, लेकिन आप यह भी पहचान लेंगे कि वह इसे शास्त्रीय टुकड़े की तरह बजा रहा है। फिर अचानक, वह स्विच करेगा और "अमेजिंग ग्रेस" को ऐसे बजाएगा जैसे कि यह फर्स्ट बैपटिस्ट चर्च के किसी तरह के गायन में एक सुसमाचार गीत हो। वह पियानो बजाना शुरू कर देगा और "अमेजिंग ग्रेस" को ऐसे बजाना शुरू कर देगा जैसे कि यह बैपटिस्ट चर्च के संदर्भ में होगा। और फिर अचानक, वह फिर से बदल जाएगा, आप दोनों शास्त्रीय रूप से पहचानते हैं कि यह "अमेजिंग ग्रेस" था और जब इसे गॉस्पेल तरह के गीत के रूप में बजाया गया था, "अमेजिंग ग्रेस", और फिर अचानक, वह इसे जैज़ में बदल देगा। और यह लगभग ऐसा है जैसे आप न्यू ऑरलियन्स में हैं और यह आदमी सड़क पर है। वह यह गाना "अमेजिंग ग्रेस" बजा रहा है। अब वैसे, क्या आप इसे जैज़ के रूप में पहचानते हैं, आप इसे तुरंत पहचान लेते हैं कि यह जैज़ है। लेकिन आप यह भी पहचानते हैं कि गाना "अमेजिंग ग्रेस" है। अब उनमें से हर एक "अमेजिंग ग्रेस" है। लेकिन उन्हें पूरी तरह से अलग तरीके से बजाया जाता है और आप देख सकते हैं कि वह एक शास्त्रीय दर्शकों के लिए इसे इस तरह से बजा सकता है, एक गॉस्पेल दर्शकों के लिए, वह इसे इस तरह से बजाता है। यदि आप न्यू ऑरलियन्स में हैं, तो वह इसे इस तरह से बजाएगा। यह वही गाना है, लेकिन अलग है।

जो कोई भी बहुत कुछ सिखाता है, वह जानता है। जब मैं बहुत छोटा था, मैंने ब्रिस्टल, टेनेसी में एक बाइबल कॉलेज में पढ़ाया, और मैं एक पादरी था, पाँच अलग-अलग चर्चों में प्रचार करता था, और इसलिए मेरे पास पाँच चर्च थे और हर हफ्ते मैं एक अलग चर्च में जाता और प्रचार करता। तो यह एक सर्किट राइडर प्रचारक की तरह था। मैं चर्चों में जाता। तो जो हुआ वह यह था कि, मैंने एक उपदेश तैयार किया और मैं उपदेश देता। अब पहले चर्च में, मैं इसे प्रचार करता, और फिर दूसरे, अगले हफ्ते, मैं एक अलग चर्च में वही उपदेश देता। तीसरी बार, मैं तीसरे चर्च, चौथे और पाँचवें चर्च में प्रचार करता। मैं लगातार पाँच हफ्ते एक ही उपदेश देता और पाँच अलग-अलग चर्चों में करता। पाँच अलग-अलग श्रोता थे।

अब जब भी मैंने उपदेश दिया, क्या यह एक ही उपदेश था? यह एक ही उपदेश था, पाँचों बार, लेकिन मेरी पत्नी मेरे साथ इन विभिन्न चर्चों में जाती थी और वह हमेशा कहती थी कि पहली

बार जब आपने उपदेश दिया, तो यह बहुत भयानक था। आप पहली बार में ही हार मान जाते हैं, वह कहती है, "पहली बार में आप वास्तव में इसे अच्छी तरह से नहीं समझ पाए।" उसने कहा कि दूसरी बार यह बहुत बेहतर हो गया। उसने कहा कि तीसरी बार आप सबसे अच्छे थे। तीसरी बार आपने वास्तव में इसे बेहतर बनाया और आपने इसे वास्तव में अच्छी तरह से उपदेश दिया। उसने कहा कि चौथी और पाँचवीं बार, वह कहती है, विशेष रूप से पाँचवीं बार, उसने कहा, "मैं बता सकती थी कि आप अपने उपदेश से ऊब गए थे।" एक तरह से चरमोत्कर्ष आ रहा था। यह शुरू में भयानक था, यह बेहतर और बेहतर होता गया, और अंत में मैंने इसे सही किया और फिर जब मैंने इसे सही किया तो यह नीचे की ओर चला गया। तो, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि पाँच अलग-अलग चर्चों में दिए गए एक ही उपदेश में, क्या मैंने कभी बिल्कुल एक जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया? कुछ, लेकिन प्रत्येक चर्च के साथ, क्या कहानियाँ थोड़ी अलग थीं? क्या चीज़ों में थोड़ा बदलाव किया गया था? कुछ दर्शकों की बातचीत पर निर्भर थे और कुछ मेरे द्वारा धर्मोपदेश को एक अलग स्तर पर गढ़ने, उसे फिर से संपादित करने पर निर्भर थे। तो मैं बस इतना कह रहा हूँ कि एक ही कहानी को कई अलग-अलग तरीकों से बताना संभव है।

यह भी सामने आया है, मेरा बेटा अफ़गानिस्तान से वापस आया है, और वह कहानियाँ सुनाता है, मैंने उसकी कहानियाँ अब कई बार सुनी हैं, और हर बार जब वह कहानी सुनाता है तो यह बहुत दिलचस्प होता है, वह इसे एक बार अपने भाइयों और बहनों को सुनाता है, और वह कहानी सुनाता है और हर कोई हँसता है और फर्श पर लोटता है, वह एक अद्भुत कहानीकार है। और वह कहानी सुनाता है और यह वास्तव में हास्यप्रद है। भाई-बहन चले जाते हैं और वह सिर्फ मेरी पत्नी और मुझसे बात करता है और फिर वह हमें वही कहानी सुनाता है, लेकिन पूरी तरह से अलग अर्थ के साथ। वह बस कुछ बहुत ही भारी चीज़ें बताता है और यह वही कहानी है लेकिन दर्शकों पर अलग प्रभाव के साथ सुनाई जाती है। और इसलिए कहानी सुनाना महत्वपूर्ण है।

टी. मत्ती और लूका में प्रलोभन का क्रम [68:15-72:13]

एच: कम्बाइन TX; 68:15-87:22; संक्षिप्त अंतर भाग 2

यहाँ आपके पास जो है, तो चलिए इसे देखते हैं। मैथ्यू कहानी के साथ कैसे कर रहा था?

मैथ्यू मसीह के प्रलोभन को लेता है, चट्टानों को रोटी में बदल देता है। उन्होंने वहाँ से क्यों शुरू किया? यीशु चालीस दिनों से उपवास कर रहे थे, इसलिए पहला सवाल जो वह उनसे पूछने जा रहे थे कि क्या आप कुछ खाना चाहते हैं। इसलिए वे सभी चट्टानों को रोटी से शुरू करते हैं, लेकिन ध्यान दें कि मैथ्यू राज्य के साथ कैसे समाप्त होता है, उसे दुनिया के सभी राज्य दिखाता है, "झुककर मेरी पूजा करो।" मैथ्यू अध्याय 4, ये सभी राज्य हैं और मेरी पूजा करो। मैथ्यू का अध्याय पाँच क्या बताता है? मैथ्यू अध्याय 5 आनंद में जाता है: धन्य हैं आत्मा में गरीब; धन्य हैं नम्र; धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए गए हैं; धन्य हैं हृदय से शुद्ध, क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। यह पर्वत पर उपदेश है। इसलिए अध्याय 4 के बाद, आपको पर्वत पर उपदेश, राज्य के बारे में शिक्षाएँ और पर्वत पर उपदेश मिलते हैं। इसलिए मैथ्यू ने मसीह के प्रलोभन को इस दुनिया के राज्यों के साथ समाप्त करके राज्य की शिक्षाओं को स्थापित किया, "झुककर मेरी पूजा करो।" अब यीशु आपको अपने राज्य के बारे में बताएंगे। उनका राज्य पर्वत पर उपदेश में पाया जाता है, क्योंकि वे राज्य में रहने का वर्णन करते हैं। इसलिए मैथ्यू, मुझे नहीं पता, अपने मूल क्रम को बदल देता है, हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं, लेकिन मैथ्यू में आप देख सकते हैं कि यह मैथ्यू के इसे कैसे लेने जा रहा है, इस कथा में पूरी तरह से फिट बैठता है, यीशु अब पर्वत पर उपदेश में अध्याय 5, 6 और 7 में राज्य पर शिक्षा देने जा रहा है। इसलिए मैथ्यू की कहानी, मसीह के तीन प्रलोभन, राज्य के साथ समाप्त होते हैं और फिर यीशु राज्य पर शिक्षा देने जा रहे हैं।

और ल्यूक के बारे में आप क्या कहते हैं? और वास्तव में यह पहला वर्ष है जब मैं इसे देख रहा था, लेकिन ल्यूक ने चट्टानों से रोटी बनाना शुरू किया, निश्चित रूप से क्योंकि यीशु भूखा था, राज्य की दुनिया को दूसरा पेश किया गया, लेकिन मंदिर का शिखर, "अपने आप को मंदिर के शिखर से नीचे फेंक दो और स्वर्गदूत तुम्हें पकड़ लेंगे और तुम्हें ऊपर ले जाएँगे।" मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन यह कैसे एक से दूसरे में ले गया, और मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि क्या ल्यूक इस शिखर के साथ समाप्त होता है, शिखर से कूदना, मुझे आश्चर्य है कि क्या ल्यूक में आगे जो कुछ भी है उससे कोई संबंध है," और निश्चित रूप से, अनुमान लगाइए क्या? ल्यूक ने यीशु को नासरत में आराधनालय में जाते हुए, नासरत में आराधनालय में शिक्षा देते हुए दिखाया, नासरत उनका गृहनगर था। उनके गृहनगर के लोगों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया और वे उन्हें उस चट्टान

पर ले गए जो आर्मागिडन घाटी, जेज्रेल घाटी को देखती है, वे उन्हें नासरत से इस चट्टान पर ले गए और वे उन्हें चट्टान से नीचे फेंकने जा रहे हैं, इसलिए यीशु को चट्टान से नीचे फेंक दिया जाएगा या कूद दिया जाएगा, और नीचे फेंक दिया जाएगा, ठीक उसी तरह जैसे यह शिखर है, "शिखर पर चढ़ो और कूद जाओ, उसके स्वर्गदूत तुम्हें सहारा देंगे।" और फिर आपके पास यीशु को चट्टान पर ले जाने और चट्टान से नीचे फेंकने की यह कहानी है। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि लूका की इस शिखर छलांग के साथ समाप्त होने वाली कहानी, लूका की नासरत में यीशु के शिक्षण की अगली कहानी की ओर ले जाती है। इसका निष्कर्ष यह है कि नासरत में उसके अपने लोग उसे अस्वीकार कर देंगे, और उसे शिखर पर ले जाएंगे, और वे उसे नीचे फेंक देंगे।

तो वैसे भी मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि यह खूबसूरती से गढ़ा गया साहित्य है। दूसरे शब्दों में, आदमी इस कहानी को गढ़ता है ताकि यह फिट हो जाए, वह कहानी को कहानी से जोड़ता है, ये कहानियाँ जैविक रूप से जुड़ी हुई हैं। एक दूसरे में प्रवाहित होती है और उन्हें इस तरह से गढ़ा जाता है कि वे एक दूसरे में प्रवाहित होती हैं। यहाँ क्रम का अंतर है, इसलिए आप विरोधाभास कह सकते हैं, शास्त्र में, क्रम अलग है। क्रम अलग होने का एक कारण है। इस तरह से प्रत्येक लेखक अपनी कहानी बताना चाहता है। इसलिए प्रलोभन का क्रम वास्तव में यहाँ उतना महत्वपूर्ण बिंदु नहीं है, मुद्दा मसीह का प्रलोभन है। तो यह क्रम में अंतर है, और हमें इसके स्पष्ट उदाहरण मिले हैं।

यू. क्रॉस पर शीर्षक के विभिन्न रूप [72:13-75:13]

अब, यहाँ, आइए कुछ अन्य अंतरों पर चलते हैं। यहाँ उद्धरण में अंतर है। यह अंतर उद्धरण है। जब यीशु क्रूस पर लटका हुआ था, तो उसके सिर के ऊपर क्या शीर्षक था? और हम जो कर सकते हैं वह है विभिन्न सुसमाचारों को खींचना, हम सुसमाचारों को खींचेंगे, और यह हमें बताता है कि जब यीशु को क्रूस पर लटकाया गया था, तो यह शीर्षक क्रूस पर रखा गया था। मैथ्यू 27:37 में, क्रूस के ऊपर शीर्षक कहता है, "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" ठीक है, तो यह वही है जिसकी आप अपेक्षा करेंगे, "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" यह वह शीर्षक था जो क्रूस पर यीशु के ऊपर था, मैथ्यू 27:37। ल्यूक और मार्क क्या कहते हैं? मार्क ने "यह यीशु है" को हटा दिया और मार्क ने

केवल "यहूदियों का राजा" लिखा। उसने पहला भाग हटा दिया, लेकिन उसने "यहूदियों का राजा" रखा। अब आप कहते हैं, ठीक है, आप उम्मीद करते हैं कि मार्क छोटा होगा। मार्क की पुस्तक काफी संकुचित और छोटी है इसलिए मार्क ने इसे हटा दिया। आप पूछते हैं: उसके सिर के ऊपर क्रूस पर वास्तव में क्या था? मसीह के सिर के ऊपर शीर्षक पर क्या था? मार्क ने "यह यीशु है" को हटा दिया, इसलिए वे अलग हैं। मैं बस यही बताना चाह रहा हूँ कि वे अलग हैं। मसीह के सिर के ऊपर शीर्षक पर जो लिखा था उसका उद्धरण अलग है। लूका अध्याय 23 पद 38 में इस तरह से आता है। लूका कहता है "यह यहूदियों का राजा है।" अब मैथ्यू ने कहा "यह यीशु है, यहूदियों का राजा" लूका कहता है "यह यहूदियों का राजा है।" यह नाम, यीशु को हटा देता है। तो अब, यहाँ क्या होता है कि आपके पास तीन अलग-अलग रीडिंग हैं और इसलिए मैं आपसे पुनरुत्थान में पूछता हूँ, इसलिए, इनमें से कौन सी रीडिंग वास्तव में मसीह के सिर के ऊपर थी?

अब, आप कहते हैं, "मैथ्यू को सबसे ज़्यादा मिलता है, इसलिए आप सबसे बड़ा चुन सकते हैं, जिसे उसमें से संक्षिप्त किया जा सकता है," लेकिन आप देखिए, यहाँ एक अंतर है। मेरा कहना यह है कि आपके पास मसीह के सिर के ऊपर शीर्षक पर जो लिखा था उसका एक उद्धरण है, और वास्तव में वह क्या था, इसकी तीन अलग-अलग रिकॉर्डिंग हैं, इसलिए वे अलग-अलग हैं।

और आप कहते हैं, "एक मिनट रुको, हिल्डेब्रांट, जॉन के बारे में क्या?" अंदाज़ा लगाइए, क्या आप उम्मीद करेंगे कि जॉन अलग होगा, निश्चित रूप से, वह अलग है! जॉन ने यीशु के सिर के ऊपर क्रॉस के ऊपर शीर्षक लिखा है, "नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।" तो आप कहते हैं, ठीक है, उन सभी के पास "यहूदियों का राजा" है, इसलिए "यहूदियों का राजा" वहाँ होना चाहिए, लेकिन क्या उसने कहा, "यह यीशु है," क्या उसने कुछ नहीं कहा, क्या उसने यीशु का नाम छोड़ दिया और कहा, "यह यहूदियों का राजा है" या उसने कहा "नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा" यीशु के सिर के ऊपर क्रॉस पर जो लिखा था, उसके लिए चार अलग-अलग रीडिंग हैं।

V. संभावित स्पष्टीकरण—सारांश और अनुवाद [75:13-79:00]

तो मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि कभी-कभी जब आपके पास उद्धरण होते हैं, और मुझे बस एक बड़ा मुद्दा बनाने दें-- कभी-कभी नए नियम में, और यह कहता है कि यीशु ने कहा, समस्या

क्या है? यह आपको यीशु के सटीक शब्द नहीं दे रहा है। यह आपको उनके द्वारा कही गई बातों का सारांश दे रहा है। वे कभी-कभी अपने शब्दों में सारांश दे रहे हैं। उसी तरह जैसे कि अगर आप लंच करने के लिए लेन गए, तो आप कहेंगे, "प्रोफेसर फिलिप्स ने यह कहा है।" आप उनके शब्दशः उद्धरण नहीं दे रहे हैं, आप उनके द्वारा कही गई बातों का सारांश दे रहे हैं, और आप अक्सर अपने शब्दों में सारांश दे रहे हैं। तो फिर आपको जो हो सकता है वह यह है कि आपको सावधान रहना होगा। ये तकनीकी उद्धरणों की तरह उद्धरण नहीं हैं, जहाँ हर शब्द बिल्कुल वही होता है जो उन्होंने कहा था।

तो आप इन अंतरों का हिसाब कैसे लगाते हैं? खैर, इसका कुछ हिस्सा सिर्फ यह कह सकता है कि क्रॉस के शीर्षक पर क्या लिखा है। यह बहुत संभव है -- और वास्तव में हम अभिलेखों से जानते हैं, कि क्रॉस का शीर्षक तीन भाषाओं में था। और इसलिए आपके पास संभवतः ग्रीक और अरामी भाषाएँ हैं। तो इनमें से एक ग्रीक होगी, इनमें से एक अरामी होगी और दूसरी किसी दूसरी भाषा में होगी और आप देखेंगे कि आपके पास तीन अलग-अलग भाषाएँ हैं। तो क्या यह संभव है कि तीन अलग-अलग भाषाओं में उनके तीन अलग-अलग शीर्षक हों? दूसरे शब्दों में, यह शब्दशः नहीं था, और अलग-अलग भाषाओं में उनके अलग-अलग शीर्षक थे। तो यहाँ जो होगा वह यह होगा कि प्रत्येक व्यक्ति ने उन भाषाओं में से एक अलग की नकल की और तीनों अलग-अलग भाषाएँ एक जैसी नहीं थीं। यह संभव है। तो तीन अलग-अलग भाषाओं में क्रॉस के बारे में तीन अलग-अलग विवरण, यह संभव है।

चलिए थोड़ा और आगे बढ़ते हैं। जब आपकी बाइबल में लाल अक्षरों वाली बाइबल होती है, तो आपके पास यीशु ने जो कहा, वह लाल अक्षरों में होता है, तो इसमें क्या समस्या है? यीशु ने कौन सी भाषा में बात की? यीशु ने अरामी भाषा में बात की। *तलिथा कुम*, यीशु ने छोटी लड़की से कहा। "छोटी लड़की, उठो।" यीशु ने अरामी भाषा में बात की। हमारा नया नियम किस भाषा में लिखा गया है? हमारा नया नियम ग्रीक भाषा में लिखा गया है। इसलिए नए नियम में यीशु ने जो कहा, उसका अनुवाद है। यीशु ने अपने शिष्यों से अरामी भाषा में बात की। नए नियम में यीशु ने जो कहा, उसका ग्रीक भाषा में अनुवाद है। यह बहुत संभव है और अगर आपने कोई अनुवाद कार्य किया है, तो इसकी संभावना है कि अलग-अलग अनुवादक चीज़ों का अलग-अलग अनुवाद करते हैं। यह

कोई सही है या कोई गलत, यह सिर्फ़ इतना है कि वे इसका अलग-अलग अनुवाद करते हैं। इसलिए यीशु ने अरामी भाषा में शिक्षा दी। खैर, हमारे पास नया नियम है, इसलिए यह ग्रीक भाषा में है। इसलिए आपको इसके लिए छूट देनी होगी। इसलिए हम यीशु के सटीक उद्धरण उद्धृत नहीं करेंगे क्योंकि यीशु ने अलग भाषा में बात की थी। यह ऐसा होगा जैसे कोई स्पेनिश में बोल रहा हो और फिर उसका अंग्रेजी में अनुवाद हो जाए। अलग-अलग अनुवादक इसका अलग-अलग अनुवाद करेंगे। आप कहते हैं, पाब्लो कहते हैं, और आप उसे स्पेनिश में उद्धृत करते हैं लेकिन आप उसे अंग्रेजी में उद्धृत कर रहे हैं। खैर, पाब्लो ने वास्तव में कहा, "क्यू पासा" या कुछ और और आप इसे अलग-अलग तरीकों से अंग्रेजी में अनुवाद करने जा रहे हैं।

इसलिए जब आप इस बारे में सोचें तो आपको इसे अपने दिमाग में रखना चाहिए। कुछ अंतरों के लिए अनुवाद संबंधी समस्याएँ जिम्मेदार हो सकती हैं। उनमें से कुछ यह हो सकती हैं कि अनुवाद में अलग-अलग भाषाएँ दिखाई देती हैं। अन्य लेखक का उद्देश्य हो सकता है, लेखक का उद्देश्य जो किसी बात से अपनी बात कहना चाहता था और उस तरह से करता है। इसलिए उद्धरण में भिन्नता है और आपको इसके बारे में पता होना चाहिए।

डब्ल्यू. उद्धरण में भिन्नता: पीटर का उद्धरण [79:00- 83:08]

पीटर का उद्धरण, "तुम मुझे कौन कहते हो" और आप पीटर के उद्धरण को पढ़ सकते हैं, "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र।" ठीक है, अगर आप पीटर के उद्धरण को लें और इसे अन्य सुसमाचारों के माध्यम से देखें, तो आप देखेंगे कि उद्धरण में फिर से भिन्नता है। तो उद्धरण में भिन्नता है।

वैसे, मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप इस बारे में सोचें कि आप अपने दोस्तों को कैसे उद्धृत करते हैं, जब आप कहते हैं कि फलां व्यक्ति ने यह कहा। अक्सर आप उन्हें शब्दशः उद्धृत नहीं कर रहे होते हैं, आप उसका सारांश दे रहे होते हैं। एक और बात जो मुझे कहना चाहिए, वह है यीशु के शब्दों के संदर्भ में। उपदेशों के बारे में सोचें। मैथ्यू में वापस याद करें, हमने मैथ्यू की पुस्तक में पाँच महान प्रवचनों के बारे में बात की थी। मैथ्यू के पाँच महान प्रवचन, आपको इस पर्वत पर उपदेश को पढ़ने में कितना समय लगता है? पर्वत पर उपदेश मैथ्यू 5, 6 और 7 है। आपको इसे

पढ़ने में कितना समय लगता है? ठीक है, अगर आप इसे ज़ोर से पढ़ें, और मेरे ग्रीक छात्र इसे ग्रीक में ज़ोर से पढ़ सकते हैं, तो आपको इस पर्वत पर उपदेश को पढ़ने में शायद दस मिनट लगेंगे। अब आप में से कितने लोग वास्तव में सोचते हैं कि जब यीशु ने पर्वत पर उपदेश दिया था, तो उपदेश दस मिनट लंबा था? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब यीशु ने उपदेश दिया, पहाड़ी उपदेश, तो वह दस मिनट से कहीं ज़्यादा लंबा था। तो यीशु ने शायद क्या उपदेश दिया, आधे घंटे का, एक घंटे का? उनमें से कुछ लोग, जब प्राचीन समय में उपदेश देते थे, तो वे घंटों तक उपदेश देते थे। और हमारे पास दस मिनट क्या हैं? हमारे पास यीशु ने जो कहा, उसके दस मिनट हैं। हमारे पास घंटे या वह घंटा नहीं है जो उन्होंने दिया था।

वैसे हम जानते हैं कि यह सच है, क्या आपको याद है कि हम अभी प्रेरितों के काम की पुस्तक में कुछ पढ़ रहे हैं, आपके पास प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ने के लिए सामग्री है। क्या आपको याद है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में, आपके पास यह अध्याय 20 है। आपके पास यूतुखुस है, और पॉल एक धर्मोपदेश देता है, और पॉल उत्तर-पश्चिम तुर्की में त्रोआस में एक धर्मोपदेश देता है। पॉल धर्मोपदेश दे रहा है, और पॉल का धर्मोपदेश इतना लंबा है, यह कभी-कभी इस क्लास की तरह होता था, कि धर्मोपदेश इतना लंबा हो जाता है कि यूतुखुस नाम का यह व्यक्ति खिड़की के किनारे सो जाता है, और वह वास्तव में खिड़की से बाहर गिर जाता है क्योंकि वह पॉल के धर्मोपदेश के दौरान सो गया था। पॉल को बाहर जाकर इस आदमी को मृतकों में से उठाना पड़ा, क्योंकि उस आदमी की गर्दन टूट गई थी या कुछ और। इसलिए पॉल उसे खिड़की से गिरने से ठीक करता है

तो मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि जब यह यीशु के शब्दों को कहता है, जब आपके पास यीशु के ये महान प्रवचन होते हैं, तो ओलिवेट प्रवचन केवल दो अध्यायों का होता है, बारह को भेजने का प्रवचन एक अध्याय लंबा होता है। हमें जो मिल रहा है वह तीन मिनट का सारांश, या सार, या इस उपदेश का संक्षेपण है जो शायद आधे घंटे, एक घंटे तक चलता, लेकिन हमें इसका केवल इतना ही हिस्सा मिला है। इसलिए सावधान रहें।

जब --"लोग कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" - "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं," तो वे भिन्न रूप में होंगे, इसे उद्धरणों के रूप में न सोचें। वे आपको सारांश दे रहे हैं, जो उन्होंने वहाँ कहा है, उसका सार प्रस्तुत कर रहे हैं। तो "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं।" यहाँ मार्क है, "आप मसीह हैं" अब आप देखते हैं कि वह छोड़ देता है। फिर से, मार्क छोटा है। मार्क मुद्दे पर पहुँच जाता है, "आप मसीह हैं।" वह "जीवित परमेश्वर के पुत्र" को छोड़ देता है। ल्यूक कहता है, "परमेश्वर का मसीह।" तो ल्यूक यहाँ "मसीह" और "परमेश्वर" को लेता है और उन्हें अपने तरीके से एक साथ रखता है। इसलिए मैं बस इतना कह रहा हूँ कि सावधान रहें कि ये सटीक उद्धरण हैं। उद्धरणों में भिन्नताएँ हैं, उनमें से कुछ इस तथ्य से संबंधित हो सकते हैं कि यीशु ने अरामी भाषा में बात की थी और ये इसके अलग-अलग अनुवाद हैं, उनमें से कुछ रचना संबंधी समस्या हो सकती है। समस्याएँ नहीं, लेकिन लेखक मैथ्यू, मार्क और ल्यूक उनमें से प्रत्येक के साथ कुछ अलग करने की कोशिश कर रहे हैं। तो उन्हें लेखक की रचना से ही काम चलाना होगा। कभी-कभी वे सिर्फ वही संक्षेप में बताते हैं जो उसने कहा और वे उसे अलग-अलग तरीके से संक्षेप में बताते हैं। बस इतना ही। उद्धरण चिह्नों के बारे में ज़रूरी तौर पर न सोचें।

यहाँ कुछ अन्य अंतर हैं। कभी-कभी संख्या में अंतर होता है। मैथ्यू 8:28 में वह दुष्टात्माओं से ग्रसित लोगों के पास आता है। गेरेसा से कितने दुष्टात्माएँ हैं? आपको यह कहानी याद है, एक आदमी था जो बाहर आता है, वह खुद को काट रहा है, वह कब्रिस्तान में है, खुद को काट रहा है। वे उसे जंजीरों से बांधते हैं, वह जंजीरों को तोड़ देता है, और कोई भी उसे बांध नहीं सकता। मैथ्यू अध्याय 8 में गेरेसा के दो दुष्टात्माएँ हैं, और यीशु ऊपर आते हैं, और उन्हें बाहर निकालते हैं। यह सेना है, वे कहते हैं कि कृपया हमें सूअरों में डाल दें, और सूअर पहाड़ी से नीचे भाग जाएँ और

गलील की झील में डूब जाएँ। इसलिए मैथ्यू 8 में, गेरेसा के दो दुष्टात्माएँ हैं। यीशु दो लोगों में से दुष्टात्माओं को बाहर निकालते हैं।

संख्या में अंतर: राक्षसी [83:08- 85:07]

जब आप मार्क के पास जाते हैं, मार्क के पास अध्याय 5:2 में कहानी है, एक दुष्टात्मा है। यीशु ने उसमें से दुष्टात्मा सेना को बाहर निकाल दिया। वह घर वापस जाता है और उन महान चीजों के बारे में बताता है जो परमेश्वर ने उनके लिए की हैं। तो पुनरुत्थान में, क्या दो दुष्टात्माएँ होंगी, या एक दुष्टात्मा? मुझे लगता है कि आप कहते हैं, ठीक है, यह वास्तव में मुद्दा नहीं है, हो सकता है - क्या यह संभव है कि तीन या चार हो सकते थे? मैथ्यू हमें उनमें से केवल दो के बारे में बताता है। या यह संभव है कि उनमें से केवल एक हो। आइए इसे आपके सामने रखें। आप में से कितने लोग, जब आप अपने माता-पिता को बताते हैं कि क्या हुआ, और आप रात में किसी पार्टी या किसी और चीज़ में बाहर थे, और आप बाहर गए और आप जानते हैं, आप शहर में हैं और आप कुछ हिस्से बताते हैं। क्या आप कहानी का हिस्सा बताते हैं, या आप पूरी कहानी बताते हैं? ठीक है, आप वह हिस्सा बताते हैं जो आपको लगता है कि आपके माता-पिता सुनना चाहेंगे। आप दूसरा हिस्सा नहीं बताते। तो यह सवाल नहीं है: क्या आप उनसे झूठ बोल रहे हैं? नहीं, आप उनसे झूठ नहीं बोल रहे हैं, आपने बस उन्हें उस रात हुई सारी बातें नहीं बताईं, क्योंकि आप किसी परेशानी में नहीं पड़ना चाहते, और इसलिए आप कहानी का सिर्फ़ एक हिस्सा बताते हैं। आप पूरी कहानी नहीं बताते।

X. भाग/संपूर्ण मुद्दा [85:07-87:22]

तो यह संभव है कि यहाँ, हमारे पास एक भाग/पूरा मुद्दा हो। वह कहानी का एक हिस्सा बताता है। दो लड़के हैं, और दूसरा एक लड़का है और वह आपको पूरी कहानी नहीं बता रहा है। वहाँ तीन या चार हो सकते थे। लेकिन वह आपको सिर्फ़ दो पर ध्यान केंद्रित करते हुए बता रहा है, और मार्क का एक मामला। इस साल एक क्लास में एक महिला थी, और उसने यह तथ्य उठाया, वह कहती है, "एक अभिभावक के रूप में भी, क्या एक अभिभावक हमेशा अपने बच्चों को पूरी कहानी बताता है?" और यह सच भी है। अक्सर माता-पिता बच्चों को कहानी का सिर्फ़ एक हिस्सा बताते हैं और फिर बच्चे, आप जानते हैं, किसी निश्चित स्थिति में उन्हें सब कुछ जानना उचित नहीं

है। मुझे पता है कि मैं अपने दिमाग में बहस कर रहा हूँ, अब, और हमारे बच्चे आम तौर पर - मेरी पत्नी और मैं लड़ते हैं, जैसे कोई भी शादीशुदा व्यक्ति लड़ता है। मेरी पत्नी और मैं आम तौर पर जब लड़ते हैं, तो हमने अपने बच्चों के सामने लड़ने की आदत नहीं बनाई। इसलिए मेरे बच्चों ने कभी भी मेरी पत्नी और मुझे आपस में झगड़ते हुए नहीं देखा क्योंकि हम आम तौर पर, जब हम झगड़ते हैं तो हम ऊपर जाते हैं, दरवाज़ा बंद करते हैं, और फिर हम इसे बाहर निकालते हैं। लेकिन हम इसे बच्चों से दूर करते हैं। मैं अब इस बात पर बहस कर रहा हूँ कि क्या ऐसा करना एक समझदारी भरा काम था, या एक अभिभावक के तौर पर ऐसा करना एक मूर्खतापूर्ण काम था। क्या अपने बच्चों को यह दिखाना अच्छा है कि झगड़ों को कैसे सुलझाया जाए और उनके सामने ऐसा किया जाए? या यह अच्छा है कि इसे अलग से किया जाए ताकि वे इसे न देखें, और फिर यह गलत धारणा दें कि शायद माता-पिता झगड़ते नहीं हैं। मेरे बच्चे इससे बेहतर जानते हैं, लेकिन यह बस है, मैं आगे-पीछे होता रहता हूँ। इस साल कक्षा की एक लड़की ने कहा, कि उसके परिवार में, उसके माता-पिता उसके सामने झगड़ते थे, और एक छोटी बच्ची के तौर पर, वह हमेशा सोचती थी, आप जानते हैं, क्या मैंने झगड़ों को जन्म दिया है। इसलिए उसने तब बहुत सारा अपराध बोध लिया, और सोचा कि उसने ही झगड़ों को जन्म दिया है, जबकि इसका उससे कोई लेना-देना नहीं था। आपको इस तरह की चीज़ों के बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए। लेकिन मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि माता-पिता अपने बच्चों को वह सब कुछ नहीं बताते जो चल रहा है। जब हम आर्थिक तंगी या ऐसी ही किसी चीज़ में होते हैं, तो हम अपने बच्चों पर वह वित्तीय बोझ नहीं डालते। उनके लिए कुछ चीज़ों के बारे में जानना अनुचित है। कॉलेज के छात्रों के रूप में आपके दृष्टिकोण से, आप जानते हैं, आप अपने माता-पिता को भी सब कुछ नहीं बताते हैं। और इसलिए भाग/पूरी तरह की चीज़ें, इस मामले में संख्या भिन्नता, दो राक्षसी, एक राक्षसी एक भाग/पूरी तरह की चीज़ है।

Y. समय में परिवर्तन—बारह को भेजना [87:22-91:07]

I: संयुक्त Y-AB; 87:22-98:40; संक्षिप्त अंतर, भाग 3

अब यह एक बड़ी बात को सामने लाता है: समय में बदलाव। मैं यहाँ इसका एक विशेष उदाहरण देखना चाहता हूँ, और इसका मंदिर की सफाई से संबंध है। अब हम यहाँ जॉन की तुलना

करने जा रहे हैं। जॉन, मंदिर की सफाई के बारे में बताता है जहाँ यीशु अंदर जाता है और मंदिर में मेज़ों को पलट देता है, और दुकानदारों को बाहर निकालता है, और यहाँ से कबूतरों को निकालता है। यीशु जॉन 2 में ऐसा करता है, जो जॉन की पुस्तक की शुरुआत में ही है। जॉन के पास यीशु के जन्म की कोई कहानी नहीं है। वह शुरू करता है "शुरुआत में वचन था। वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।" और वह सीधे इस बात पर पहुँच जाता है कि यीशु वचन है - *लोगो*। और फिर अध्याय 2, यीशु पानी को शराब में बदल देता है, और यीशु मेज़ों को पलट देता है। फिर आपको जॉन की पुस्तक का पूरा शेष भाग मिल गया है, यीशु मंदिर को शुद्ध करता है जो जॉन की पुस्तक में उसके द्वारा की गई पहली चीज़ों में से एक है। फिर भी मैथ्यू में मंदिर की सफाई की कहानी अंत में आती है जब यीशु मंदिर में होते हैं और अपने अंतिम सप्ताह, अपने जुनून सप्ताह में जा रहे होते हैं, जब उन पर मुकदमा चलाया जाएगा और उन्हें सूली पर चढ़ाया जाएगा। वह सूली पर चढ़ने से ठीक पहले मंदिर की सफाई करते हैं।

यह भी दिलचस्प है। अंजीर के पेड़ के बारे में क्या? मैथ्यू में, यीशु अंजीर के पेड़ की निंदा करते हैं, और यह तुरंत सूख जाता है, जबकि मार्क की पुस्तक में, जब यीशु अंजीर के पेड़ को शाप देते हैं, तो अंजीर का पेड़ अगले दिन सूख जाता है। तो यह एक छोटा सा समय परिवर्तन है। हम समय में अंतर के बारे में बात कर रहे हैं। क्या मंदिर की सफाई मसीह की सेवकाई की शुरुआत या अंत में थी? यह अंजीर के पेड़ का सूखना है। यीशु अंजीर के पेड़ को शाप देते हैं या वह अंजीर के पेड़ के पास जाते हैं और उस पर कोई फल नहीं होता है। मैथ्यू में, अंजीर का पेड़ तुरंत सूख जाता है, लेकिन मार्क में, यह अगले दिन होता है, जब अंजीर का पेड़ सूख जाता है। अब, ठीक है। इस समय परिवर्तन के बारे में क्या, और मुझे लगता है कि यह यहाँ काफी महत्वपूर्ण है। मुझे इसके बारे में थोड़ा और बात करने दें। अब मैं बस सोच रहा हूँ, मुझे यहाँ थोड़ा नीचे जाना है। चलो देखते हैं। हाँ, चलो पहले मंदिर की सफाई से निपटते हैं।

एक और बात है, जहाँ लोग कहते हैं, यहाँ विरोधाभास है, जहाँ एक में, यीशु बारह को भेज रहा है, और एक में, वह कहता है, लाठी मत लो, और तुम जानते हो, बस बाहर जाओ, लाठी मत लो, अपने साथ कुछ मत लो, बस मेजबानों पर निर्भर रहो। और दूसरे में, वह कहता है कि अपने साथ लाठी ले जाओ, इसलिए मत्ती 10:10 और मरकुस 6:8 के बीच एक अंतर है। मुझे लगता है कि यह बहुत

आसानी से हल हो गया है। क्या यीशु ने बारह को बार-बार भेजा, शायद। क्या यीशु ने बारह को विभिन्न संदर्भों में भेजा? और इसलिए एक बार, उसने उनसे कहा, लाठी ले लो, दूसरे में वह उनसे कहता है कि लाठी मत लो। यह भी हो सकता है, कि उसके पास कुछ लोग हैं, जिन्हें वह गलील में भेज रहा है और वह उन लोगों से कहता है। "लाठी मत लो," क्योंकि तुम गलील जा रहे हो, तुम्हें वहाँ के लोगों से दोस्ती करनी चाहिए। और वह इन अन्य लोगों से कह रहा है, "वे डेकापोलिस क्षेत्र में जा रहे हैं और आपको वहाँ एक छड़ी की आवश्यकता होगी।" इसलिए यह संभव है कि वह अपने कुछ शिष्यों को एक छड़ी लेने के लिए कहता है, और उनमें से कुछ को एक छड़ी नहीं लेने के लिए कहता है। इसलिए, आपके पास वह परिदृश्य है जहाँ वह उन्हें दो अलग-अलग क्षेत्रों में भेज रहा है, और वह एक ही घटना में एक समूह को एक छड़ी लेने के लिए कह रहा है और दूसरे को नहीं लेने के लिए। या आप यह भी कह सकते हैं कि यीशु बारह को भेजता है, और हम जानते हैं कि अन्य स्थानों पर वह सत्तर को भेजता है। और इसलिए यीशु ने लोगों को बार-बार भेजा, और हर बार अलग-अलग सलाह के साथ, और यह संभव है। तो यह वास्तव में एक विरोधाभास नहीं है, आप इसे विभिन्न तरीकों से समझा सकते हैं।

Z. मंदिर की सफाई का परिचय: कहानी कहने में भिन्नता [91:07-95:20]

अब, मैं मंदिर की सफाई के बारे में बात करना चाहता हूँ, और वास्तव में मैं आपको एक कहानी बताना चाहता हूँ। और मुझे कर्मचारियों के साथ इस कहानी पर वापस आना चाहिए, एक कर्मचारी को ले जाना और एक कर्मचारी को न लेना, और एक कर्मचारी को वह कर्मचारी को ले जाने के लिए कहता है और दूसरे को वह कर्मचारी को न लेने के लिए कहता है। मुझे लगता है कि यह केनेथ कॉन्सर्ट था, जो एक व्यक्ति के बारे में यह कहानी बताता है। और मैं आपको एक कहानी बताना चाहता हूँ; मैं आपको बताना चाहता हूँ, दो प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताई गई।

ये दो लोग हैं जिन्होंने इस दुर्घटना को देखा। तो आपके पास दुर्घटना के दो प्रत्यक्षदर्शी हैं, ठीक है, तो यहाँ बताया गया है कि यह कैसे होता है। पहला गवाह, इस तरह से पहला गवाह पुलिस को रिपोर्ट करता है, यह हुआ। एक बस थी, बस सड़क से नीचे आई, महिला एक टेलीफोन पोल के पास खड़ी थी, बस ने पोल को टक्कर मारी, और महिला को फेंक दिया, और महिला को टक्कर

मारी। बस ने टेलीफोन पोल को टक्कर मारी, महिला को टक्कर मारी, महिला को फेंक दिया, और महिला को चोट लगी, लेकिन घातक नहीं। और उसे अस्पताल ले जाया गया। तो बस पोल से टकराती है, महिला को टक्कर मारती है, महिला को चोट लगती है, लेकिन घातक नहीं, और उसे अस्पताल ले जाया जाता है। यही एक गवाह ने देखा।

यहाँ दूसरे गवाह का विवरण दिया गया है। दूसरे गवाह का कहना है कि महिला कार में थी, कार में टक्कर लगी, उसने सीटबेल्ट नहीं पहना था, वह कार से बाहर फेंकी गई और तुरंत उसकी मौत हो गई। ठीक है, वह कार में थी, बिना सीटबेल्ट के, उसे टक्कर लगी, टक्कर लगी और वह कार से बाहर फेंकी गई और तुरंत उसकी मौत हो गई।

अब, इनमें से कौन सी कहानी सच है? वे बहुत अलग कहानियाँ हैं, है न? ये बहुत अलग कहानियाँ हैं। एक टेलीफोन पोल से, उसे घातक चोट नहीं लगी, उसे अस्पताल ले जाया गया। लेकिन फिर वह तुरंत मर गई, कार से बाहर फेंक दी गई। ठीक है, दो अलग-अलग कहानियाँ, ऐसा लगता है कि ये दो अलग-अलग गवाह हैं, ऐसा लगता है कि कहानियाँ विरोधाभासी हैं। ऐसा नहीं है। समस्या यह है कि जब भी आपके पास कोई कहानी होती है, तो आप पूरी कहानी नहीं जानते। जीवन जटिल है। यह कहना बस एक तरह की मूर्खतापूर्ण बात है, लेकिन जीवन एक कहानी से कहीं अधिक जटिल है। इस महिला के साथ क्या हुआ? यहाँ बताया गया है कि यह कैसे हुआ। यह वास्तविक सत्य है, यह वास्तव में हुआ। ठीक है दो गवाह, एक में महिला एक पोल के पास खड़ी थी। उसे बस ने टक्कर मार दी और वह घायल हो गई। एक नेक इंसान ने अपनी कार रोकੀ, महिला को उठाया और उसे अस्पताल ले जा रहा था। जब वह उसे अस्पताल ले जा रहा था, तो उसने सीट बेल्ट नहीं लगाई थी, और जब वह उसे अस्पताल ले जा रहा था, तो वह व्यक्ति एक चौराहे से गुजरा, और उसे टक्कर लग गई, और वह उसकी कार के अंदर से बाहर आ गई, और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई।

तो सवाल यह है कि कौन सा गवाह सही था? वे दोनों सही थे। समस्या यह थी कि कहानी शुरू में बताई गई कहानी से कहीं ज़्यादा जटिल थी। आप सोचते हैं- आप सोचते हैं कि कहानियाँ ऐसी ही हैं, और आपको एहसास होता है कि वहाँ एक समय अनुक्रम था, और इससे वह समस्या हल हो जाती है।

और इसलिए मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि जब आप धर्मग्रंथों के पास आते हैं तो सावधान रहें। जीवन किसी कहानी से कहीं ज़्यादा जटिल है। हमें जो हुआ उसका एक अंश ही मिल रहा है। हमें जो यीशु ने कहा उसका एक अंश ही मिल रहा है। हमें स्थिति का एक अंश ही मिल रहा है, हम हर समय पूरी स्थिति नहीं जानते, इसलिए आपको इन बड़े निर्णयों को लेने में सावधान रहना होगा - बाइबल में वे सभी विरोधाभास, देखिए यह इसका विरोधाभास करता है, उसने उन्हें लाठी लेने के लिए कहा, उसने उन्हें लाठी न लेने के लिए कहा। आप वहाँ नहीं थे, इसलिए आप नहीं जानते, आपको ठीक से पता नहीं है कि क्या हो रहा था। क्या उसने उन्हें दो अलग-अलग क्षेत्रों में भेजा, क्या उसने उन्हें एक बार लाठी लेने के लिए कहा और दूसरी बार नहीं? आप वहाँ नहीं थे और इसलिए यह मत कहिए कि बाइबल हर समय काफी विश्वसनीय साबित होती है, उन चीज़ों पर जो हम जानते हैं, कि जहाँ संघर्ष है, आपको यह कहने में सक्षम होना चाहिए, "मैं गवाह पर भरोसा करता हूँ। आप जानते हैं कि मैंने बाइबल, सत्य को सौ, लाखों बार देखा है, और इसलिए अगर इसमें कोई ऐसी चीज़ है जो विरोधाभास की तरह दिखती है, तो इसके लिए किसी तरह का स्पष्टीकरण होना चाहिए।" इसलिए सावधान रहें, जीवन शास्त्र में दर्ज की गई चीज़ों से कहीं ज़्यादा जटिल है। वास्तव में, जॉन हमें बताता है, जॉन पर क्रूर करने के लिए क्षमा करें, जॉन हमें बताता है "अगर मैं वह सब कुछ लिखूँ जो यीशु ने कभी किया, तो दुनिया की सभी किताबें उसे समेट नहीं सकतीं।" तो, ज़ाहिर है, आप बस यीशु ने जो कहा और किया उसका एक हिस्सा ही प्राप्त कर रहे हैं। तो बस इस तरह की पृष्ठभूमि है।

ए.ए. मंदिर की सफाई के चार अलग-अलग पहलू [95:20-98:40]

तो मैं इस मंदिर की सफाई पर नज़र डालना चाहता हूँ। क्योंकि मुझे लगता है कि यह वाकई बहुत दिलचस्प है। मैं इसे आगे बढ़ाना चाहता हूँ। मंदिर की सफाई, जहाँ यीशु ने मेजें पलट दीं, सभी चार सुसमाचारों में पाई जाती है। इसलिए मैं इसे सभी चार सुसमाचारों में देखना चाहता हूँ क्योंकि वे हमें अलग-अलग वर्णन देते हैं कि क्या हुआ और कब हुआ। मैं जो पूछना चाहता हूँ वह यह है: प्रत्येक सुसमाचार में मंदिर की सफाई की कहानी का क्या कार्य है? प्रत्येक सुसमाचार लेखक के लिए मंदिर की सफाई कैसे काम करती है। जब वह यह कहानी सुनाता है तो वह मंदिर

की सफाई का उपयोग कैसे करता है ? वह कहानी को किस तरह से और उस संदर्भ में प्रस्तुत करता है?

तो हम जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि मंदिर की सफाई की कहानी को धार्मिक, पुरोहिती या मंदिर की पवित्रता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, कि मंदिर की पवित्रता का उल्लंघन हुआ है। दूसरा तरीका सामाजिक न्याय का तरीका होगा, जहाँ हम देखेंगे कि यीशु आते हैं और मेज़ों को पलटते हैं और मंदिरों को साफ करते हैं ताकि वे शिक्षा दे सकें। वे ऋषि शिक्षक हैं, और वे आते हैं और तीर्थयात्री वहाँ होते हैं, उनकी शिक्षा सुनने के लिए आते हैं। और इसलिए इसे इस तरह से प्रस्तुत किया जाएगा। एक अन्य इसे इस तरह से प्रस्तुत करता है कि यीशु एक मसीहाई राजा के रूप में मेज़ों को पलट रहे हैं और उन्हें बाहर निकाल रहे हैं। यह उनका मंदिर है, वे मसीहाई राजा के रूप में इसे साफ कर रहे हैं, जिस मंदिर को वे साफ कर रहे हैं उसे फिर से परिभाषित कर रहे हैं। मंदिर उनके शरीर का मंदिर बन जाता है। फिर अंत में, लेखकों में से एक इस मंदिर की सफाई को एक भविष्यवाणी की घोषणा के रूप में लेगा। "इन चीज़ों को यहाँ से बाहर निकालो," यीशु के इस भविष्यवाणी की घोषणा में भाग लेने के रूप में, और फिर पैगंबर की अस्वीकृति। जिस तरह से उन्होंने यशायाह को अस्वीकार किया, उसी तरह से उन्होंने यिर्मयाह और यहजकेल को अस्वीकार किया, उसी तरह से उन्होंने यीशु को अस्वीकार किया। अब, मंदिर क्षेत्र में जब वह अपनी भविष्यवाणी करता है - वास्तव में यिर्मयाह, जो मंदिर में था, और वह ये भविष्यवाणियाँ करता था और लोग उस पर विलाप करते थे और उसे पीटते थे। यिर्मयाह को कठिन समय का सामना करना पड़ा। यह है, मंदिर में भविष्यवक्ता एक घोषणा करता है और फिर अस्वीकार कर दिया जाता है और फिर मंदिर पर न्याय आता है, यिर्मयाह के रूप में। यिर्मयाह ये भविष्यवाणियाँ करता है कि बेबीलोन आ रहा है और इस जगह को नष्ट करने जा रहा है और मूल रूप से लोग परेशान हो जाते हैं और वे यिर्मयाह को अस्वीकार कर देते हैं। उन्होंने यिर्मयाह को पीटा और फिर आपके पास जो है वह यह है कि मंदिर पर यह न्याय 586 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर के साथ आता है। वह आता है और मंदिर को मिटा देता है, ठीक वैसे ही जैसे यिर्मयाह ने कहा था। यिर्मयाह ने कहा कि नबूकदनेस्सर आएगा और बेबीलोन के लोग इसे मिटा देंगे, इसे नष्ट कर देंगे, और वास्तव में उन्होंने ऐसा किया। यीशु के साथ भी यही हुआ। वह आता है और मंदिर को साफ करता है और घोषणा

करता है कि मंदिर नष्ट होने जा रहा है। और निश्चित रूप से, 70 ई. में, टाइटस और रोमन आते हैं और मंदिर को नष्ट कर देते हैं। मैं यहाँ बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि मंदिर की सफाई की कहानी चार अलग-अलग तरीकों से बताई गई है। तो, चलिए अब इसे इस तरह से बताते हैं।

ए.बी. मार्क: भविष्यवाणी अस्वीकृति [98:40-104:23]

जे: संयुक्त AB-AE; 98:40-112:48; संक्षिप्त अंतर भाग 4

अब देखें कि मार्क ने मंदिर की सफाई की कहानी को किस तरह से पेश किया है। वह इसे अंजीर के पेड़ को शाप देने के साथ पेश करता है। इसलिए यीशु मंदिर में आता है और मंदिर में जाने से पहले वह इस अंजीर के पेड़ को शाप देता है। अंजीर का पेड़ इस्राएल का प्रतीक है, और इस्राएल को कोई फल नहीं मिला है जबकि उसे फल मिलना चाहिए था। यीशु उसे शाप देता है। मंदिर साफ हो जाता है, यह घटना मार्क 11:15 में है, यीशु मंदिर को साफ करता है और परिणाम यह होता है कि भीड़ चकित हो जाती है। मार्क की पुस्तक में आपको भीड़ मिलती है, आपको रोमन दर्शकों का आश्चर्य मिलता है, और इसलिए यह पूरी तरह से फिट बैठता है। वह मंदिर को साफ करता है और भीड़ चकित हो जाती है और धार्मिक नेता उसे मारना चाहते हैं। तो यहाँ आपको जो मिलता है वह मूल रूप से देश के नेताओं द्वारा पैगंबर को अस्वीकार करना है। और देश के नेता उसे अस्वीकार करते हैं, और फिर क्या होता है? इसलिए वह मंदिर को साफ करता है, और ये दो बहुत अलग प्रतिक्रियाएं होती हैं, और फिर क्या होता है। अंजीर का पेड़ सूख जाता है। अंत में, आप मार्क के अध्याय 11 की आयत 20 में वापस आते हैं, वे पुनः बाहर जाते हैं, और देखते हैं कि अंजीर का पेड़ सूख गया है।

तो यहाँ यह अंजीर के पेड़ के शापित होने से शुरू होता है और फिर अंजीर के पेड़ के मुरझाने के साथ कहानी समाप्त होती है। आप देखते हैं कि मार्क फिर एक लिफाफे की तरह फ्रेम करता है, या जैसा कि डॉ. फिलिप्स कहेंगे, एक समावेशन। यह अंजीर के पेड़ के शाप से शुरू होता है, और फिर अंजीर के पेड़ के मुरझाने के साथ समाप्त होता है। फिर अंजीर का पेड़, किताबों के अंत की तरह, मंदिर की सफाई की कहानी को समाहित करता है, मुख्य रूप से पैगंबर के अस्वीकार किए जाने के इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए। यीशु मंदिर में पैगंबर के रूप में आते हैं

और उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है। वे उन्हें मारने की कोशिश करते हैं। इसलिए पेड़ मुरझा जाता है क्योंकि पेड़ इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है, कि इज़राइल द्वारा संदेश को अस्वीकार करने के परिणामस्वरूप अंजीर का पेड़ मुरझा जाएगा। तो इस तरह से मार्क ने कहानी को एक भविष्यसूचक अस्वीकृति के रूप में फ्रेम किया। तो यह यशायाह 56:7 और यिर्मयाह 7 के साथ अधिक संरेखित है। तो मार्क ने इसे इस तरह के उद्धरण के साथ फ्रेम किया "इन चीज़ों को मेरे घर से निकाल दो" और "मेरे पिता के घर" और "चोरों की खोह" जैसी चीज़ें।

अब आइए दूसरे पर नज़र डालें। आइए मत्ती, अध्याय 21 पर नज़र डालें। अब मत्ती में, आपको याद होगा कि यह स्वर्ग के राज्य के बारे में है। इसलिए मत्ती इस मंदिर की सफाई और मंदिर क्षेत्र की मसीहाई बहाली के विचार को चित्रित करेगा, और इसलिए आइए संदर्भ को देखें और यह कैसे प्रवाहित होता है। मत्ती 21 में यीशु, यीशु मंदिर क्षेत्र में आता है, वह वहाँ कैसे पहुँचता है? वह गधे पर सवार है, लोग सभी गा रहे हैं, "होसान्ना, होसान्ना, राजा को," और यह पाम संडे है। मत्ती 21, पाम संडे में, यीशु गधे पर सवार होकर यरूशलेम में आता है, दाऊद का पुत्र अंदर आता है, "होसान्ना, होसान्ना सर्वोच्च में।" फिर यीशु क्या? यीशु मसीहा के रूप में आता है वह मंदिर में आता है और वह मंदिर को साफ करता है। चीज़ों को सही करना मसीहा की भूमिका है। इसलिए वह मंदिर को साफ करता है, अध्याय 21 श्लोक 12, वह मेज़ों को पलट देता है और उन्हें बाहर निकाल देता है। होसान्ना जारी है और फिर, मैथ्यू की पुस्तक में, यीशु ने मेज़ों को पलट दिया, उन्होंने मंदिर को साफ किया, और फिर मसीहा को क्या करना चाहिए? मसीहा को लोगों को ठीक करना चाहिए, मंदिर पर्वत पर और ये सभी उपचार हैं जो यीशु करते हैं, और दाऊद के पुत्र, लोग चिल्लाते हैं "दाऊद के पुत्र," और "बच्चों के होठों से, आपने प्रशंसा का आदेश दिया है," यीशु ने कहा। तो मैथ्यू की पुस्तक में आपके पास क्या है, यीशु ने मेज़ों को पलट दिया, और मसीहाई पुनर्स्थापना, यीशु लोगों को ठीक करते हैं। वह जो टूटा हुआ है उसे लेता है और उसे ठीक करता है। मसीहा चीज़ों को उस तरह से पुनर्स्थापित करता है जैसा कि उसे होना चाहिए। आपको उस राज्य की एक झलक मिलती है जो अभी तक यहाँ नहीं बन रहा है जब यीशु यहाँ है। यीशु राजा हैं। वह मसीहाई शासक हैं और इसलिए वह मंदिर को साफ करते हैं और लोगों को ठीक करते हैं। वह राज्य को अभी में लाते हैं। यह "पहले से ही है लेकिन अभी तक नहीं", जैसा कि डॉ मैथ्यूसन अक्सर कहा करते थे। तो

आपको "अभी तक नहीं" की एक झलक मिलती है। लेकिन यीशु यहाँ पहले से ही ऐसा कर रहे हैं क्योंकि वह इन लोगों को चंगा करते हैं और मंदिर को पुनर्स्थापित और शुद्ध करते हैं। तो यह मत्ती की पुस्तक में स्पष्ट रूप से देखी जाने वाली मसीहाई पुनर्स्थापना है। लंगड़े चंगे हो जाते हैं, बाहरी लोगों को अंदर लाया जाता है, और यह मसीहाई राज्य है। मत्ती में, आपको पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की एक झलक मिलती है। मत्ती इसे मंदिर की सफाई के रूप में चित्रित करता है। बाहरी लोगों को अंदर लाया जाता है, लेकिन अंदर के लोग विरोधी बन जाते हैं। हालाँकि, यहाँ यह एक छोटी भूमिका है।

फिर अगले दिन, अगले दिन, अंजीर का पेड़ सूख जाता है। दूसरे शब्दों में, अंजीर का पेड़ यहाँ मुद्दा नहीं है। वह मसीहाई बहाली दिखा रहा है, और इसलिए अंजीर के पेड़ को मंदिर की सफाई से अलग कर दिया गया है, और इसके बजाय अंजीर के पेड़ का उपयोग मैथ्यू में प्रार्थना पर एक पाठ के रूप में किया गया है। इसलिए मैथ्यू अंजीर के पेड़ का उपयोग इन चीजों के साथ करता है, लेकिन वह इसका उपयोग एक अलग कार्य के लिए करता है और दिखाता है कि यीशु का मंदिर की सफाई वास्तव में मसीहा है, एक मसीहाई बहाली, विशेष रूप से लोगों के उपचार की विशेषता।

ए.सी. लूका: शिक्षण का स्थान [104:23- 108:04]

अब यहाँ लूका में क्या है? यह दिलचस्प है कि लूका में, अध्याय 19, श्लोक 45 और उसके बाद, लूका ने मंदिर की सफाई की है, और यीशु क्या करते हैं? यीशु ने टेबलों को पलट दिया, लेकिन फिर लोगों को चंगा करने और इस मसीहाई राज्य में चीजें बनाने, राज्य की एक झलक दिखाने के बजाय, यहाँ आपको मंदिर में यीशु को शिक्षा देते हुए दिखाया गया है। तो यह यरूशलेम के लिए यीशु के विलाप के संदर्भ में है।

यीशु जैतून के पहाड़ पर आते हैं, और वे मंदिर क्षेत्र में जाने वाले हैं। जैसे ही वे जैतून के पहाड़ पर आते हैं, यीशु रोते हैं और वे कहते हैं, "यरूशलेम, यरूशलेम, कितनी बार एक माँ मुर्गी के रूप में, मैंने तुम्हें चूज़ों की तरह अपनी बाहों में इकट्ठा किया होगा, लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया।" वे विलाप करते हैं। आपने गेट लॉस्ट इन यरूशलेम कार्यक्रम, डोमिनस प्लेविट में देखा

होगा, वह चर्च जहाँ यीशु रोए थे। चर्च खुद एक आंसू के आकार का है और यह जैतून के पहाड़ पर है जब आप किद्रोन घाटी के पार यरूशलेम में आते हैं। और इसलिए यरूशलेम के लिए विलाप और यह पूर्वाभास है। यह पूर्वाभास क्या है? प्रभु का दिन। यह यरूशलेम के विनाश का पूर्वाभास है। परमेश्वर आपके पास आ रहा है। यरूशलेम नष्ट होने जा रहा है। प्रभु का दिन आ रहा है।

वह घटना को म्यूट कर देता है, ऐसे बदलने वालों, कबूतरों का कोई संदर्भ नहीं है, कबूतरों को ले जाने, कबूतरों को विशेष उपचार मिलने का कोई विवरण नहीं है, ऐसे बदलने वालों का कोई संदर्भ नहीं है। वह मंदिर की सफाई की घटना को म्यूट कर देता है। वह मंदिर की सफाई, मेज़ों को पलटने और इस तरह की चीज़ों की घटना को क्यों म्यूट कर देता है? मेज़ों को पलटने, कर वसूलने वालों को बाहर निकालने और कबूतरों को विशेष उपचार देने के बजाय। इसे यीशु के एक ऋषि के रूप में उदाहरण के रूप में लिया गया है जिसका शिक्षण कार्य है और यह यीशु के शिक्षण कार्य के माध्यम से है कि दर्शकों को विभाजित किया गया है। तो यीशु लूका में शिक्षक है। वह एक मसीहाई शिक्षक है, वह एक ऋषि शिक्षक है।

यह मेरे लिए बहुत दिलचस्प है, और इस साल, मैंने ल्यूक के साथ यह संबंध बनाया। ल्यूक एकमात्र सुसमाचार है, जो बताता है कि जब यीशु बारह वर्ष का था, और वह चला गया, वे उसे उसके बार मिट्ज्वा या जो भी था, के लिए मंदिर ले गए, और फिर वे चले गए और उन्होंने यीशु को पीछे छोड़ दिया। यह एक तरह से पहली लेफ्ट बिहाइंड सीरीज़ है। और यीशु को पीछे छोड़ दिया जाता है। उसके माता-पिता चले जाते हैं, और फिर अचानक, वे दो या तीन दिन बाहर निकलते हैं और कहते हैं, "ओह, यीशु कहाँ है?" कोई नहीं जानता कि वह कहाँ है। "हमने उसे खो दिया है।" तो वे यरूशलेम वापस जाते हैं, और वे कहाँ जाते हैं? वे मंदिर क्षेत्र में जाते हैं और यीशु क्या कर रहे हैं? यीशु वहाँ बैठे हैं, सुन रहे हैं और मंदिर क्षेत्र में लोगों को सिखा रहे हैं। फिर उसके माता-पिता आते हैं और कहते हैं, "अरे, हम तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित थे, तुम क्या कर रहे हो?" और यीशु कहते हैं, "मुझे अपने पिता के व्यवसाय के बारे में सोचना चाहिए। है न?" उनके पिता का व्यवसाय मंदिर में है। तो ल्यूक शुरू होता है, मुझे लगता है कि ल्यूक 2 या 3 में, वह मंदिर में शिक्षक के रूप में यीशु से शुरू होता है। फिर लूका अध्याय 19 में कैसे समाप्त होता है? वह अपनी पुस्तक के अंत में आता है, वह यीशु के पास वापस आता है जो अब मंदिर को साफ कर रहा है और एक बार फिर

मसीहाई शिक्षक बन गया है। 30-32 वर्षीय व्यक्ति के रूप में। तो यह एक तरह का साफ-सुथरा तरीका है कि जब यीशु बारह वर्ष का था और जब यीशु अपने जुनून सप्ताह से ठीक पहले था, तब लूका ने इस यीशु को ऋषि के रूप में पेश किया। यीशु बुद्धिमान शिक्षक हैं। वह लूका है। तो लूका मंदिर की सफाई की वही कहानी बताता है, वह अन्य सुसमाचारों में सामने आने वाले कुछ विवरणों को कम करके आंकता है। इसके बजाय, लूका यीशु की शिक्षा को ऋषि के रूप में पेश करता है।

ई. यूहन्ना: मंदिर निर्माण से शरीर को मंदिर बनाना [108:4-110:25]

मैं जॉन के बारे में ही बात करूँगा। हम केवल यह वर्णन करेंगे कि जॉन में क्या हुआ। जॉन में, यीशु आते हैं और सभी मेज़ों को पलट देते हैं और मंदिर को शुद्ध करते हैं, लेकिन जॉन में, जॉन मंदिर की सफाई को पहले ही बता देते हैं। जॉन मंदिर की सफाई को जॉन के अध्याय 2 में बताता है। इस तरह से यीशु ने अपना मंत्रालय शुरू किया। फिर यीशु ने क्या कहा? उन्होंने सभी मेज़ों को पलट दिया। वे उनसे पूछते हैं: ऐसा करने का आपको क्या अधिकार है? और यीशु कहते हैं, "तीन दिन में इस मंदिर को नष्ट कर दो, मैं इसे फिर से खड़ा कर दूँगा।" वह किस मंदिर की बात कर रहे हैं? यीशु मेज़ को पलटते हुए कह रहे हैं, "इस मंदिर को नष्ट कर दो और मैं इसे तीन दिन में फिर से खड़ा कर दूँगा।" वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए जॉन में, जब यीशु मेज़ों को पलटते हैं, तो मंदिर की सफाई से लेकर उनके शरीर के मंदिर तक का संक्रमण होता है। फिर तीन दिन में वह इसे मृतकों में से फिर से खड़ा कर देंगे। वैसे, क्या जॉन द्वारा उठाया गया मुद्दा, कि तीन दिनों में वह मृतकों में से जी उठेगा, यहूदियों के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण मुद्दा है? हाँ, यह है, क्योंकि क्या आपको यीशु के मुकदमे में याद है जब वह कैफा के सामने आया था? कुछ गवाह हैं जो आगे आकर कहते हैं, "हमने किस आधार पर यीशु पर आरोप लगाया?" क्योंकि उसने कहा था कि वह मंदिर को नष्ट कर देगा और तीन दिनों में उसे फिर से खड़ा कर देगा। क्या उन्हें यह समझ में नहीं आया कि वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा था? लेकिन फिर वह मृतकों में से जी उठता है, पुनरुत्थान के तीन दिन बाद उसके शरीर का मंदिर। तो जॉन में आपके पास जो है, वह यह है कि जॉन यहूदियों को यह समझाते हुए अपना सुसमाचार शुरू करता है कि वह वहाँ मंदिर के बारे में बात नहीं कर रहा है, वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा है। जब वह

मृतकों में से जी उठता है तो उसके शिष्यों ने इसे एक साथ जोड़ दिया, "ठीक है, वह इसी बारे में बात कर रहा था।" लेकिन उन्होंने गलत समझा और इसलिए जॉन मूल रूप से यीशु के बारे में यहूदियों की इस गलतफहमी को कम कर रहा है। कि यीशु मंदिर को नष्ट करने जा रहा था। यह बात नहीं है। यहूदी लोगों के लिए मुद्दा यह समझना है कि मंदिर उनके शरीर का मंदिर है। इसलिए यहून्ना ने शुरू में इसे सही बताया और इसलिए यहून्ना ने मंदिर की सफाई को मंदिर में रखा, इसे स्थानांतरित करते हुए, जिस मंदिर के बारे में वह बात कर रहा है वह उसके शरीर का मंदिर है।

एई. मंदिर की सफाई पर चार दृष्टिकोण [110:25-112:48]

तो फिर आपके पास मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन में क्या है, ल्यूक ऋषि शिक्षक है। मार्क भविष्यवाणी की अस्वीकृति है। मैथ्यू मसीहाई राज्य है, और जॉन उसके शरीर का मंदिर था। इसलिए उन्होंने लेखक के अनुसार मंदिर की सफाई की कहानी को चार अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल किया। यह बिल्कुल सुंदर है कि कैसे प्रत्येक लेखक मंदिर की सफाई की कहानी को गढ़ता है और इसे एक अलग संदर्भ में रखता है और इसे एक अलग स्वाद देता है। प्रत्येक इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखता है।

वैसे ही, और मैं एक और उदाहरण देता हूँ, और हम इसे यहीं समाप्त करेंगे। बास्केटबॉल खेल में आपके पास कितने रेफरी होते हैं? क्या आपके पास कभी सिर्फ एक रेफरी होता है? नहीं, आपके पास एक रेफरी नहीं होता, आपके पास दो या तीन रेफरी होते हैं, क्योंकि आपको अलग-अलग दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है। एक रेफरी देख सकता है, कोई व्यक्ति ऊपर जाता है और एक तरफ से मारा जाता है, दूसरा व्यक्ति यह नहीं देख पाता कि उसने उसे अपने कूल्हे से मारा और इसलिए वह व्यक्ति उड़ गया। लेकिन दूसरे रेफरी ने अलग दृष्टिकोण से देखा। यदि आपने कभी रेफरी को देखा है, तो आप देखेंगे कि वे कोर्ट के विभिन्न पहलुओं पर काम करते हैं, ताकि वे एक अलग दृष्टिकोण से देख सकें। तो आपके पास जो है वह सुसमाचार लेखक हैं जो एक ही कहानी बता रहे हैं, लेकिन वे रेफरी की तरह हैं, वे अलग-अलग दृष्टिकोणों से देख रहे हैं। तो जैसे आपको बास्केटबॉल खेल में कई रेफरी की आवश्यकता होती है, तो आपके पास क्या है, तीन सुसमाचार लेखक? वे मसीह को एक ही नज़र से देखते हैं, वे कई समान कहानियाँ बता रहे हैं। जॉन

एक बहुत ही अलग कहानी दे रहे हैं, लेकिन वे तीनों ही कहानी का इस्तेमाल कर रहे हैं और कहानी को एक अलग नज़रिए से देख रहे हैं। तो यह समकालिक समस्या का एक हिस्सा है, और अगली बार हम इसे थोड़ा और आगे बढ़ाएँगे।

केली चांग-फोंग द्वारा लिखित
बेन बोडेन द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ